Master of Arts (Hindi) (DDE)

Semester – II

Paper Code – 20HND22C1

ADHUNIK HINDI KAVITA-II

आधुनिक हिन्दी कविता–II

DIRECTORATE OF DISTANCE EDUCATION

MAHARSHI DAYANAND UNIVERSITY, ROHTAK

(A State University established under Haryana Act No. XXV of 1975)

NAAC 'A+' Grade Accredited University

Material Production

Content Writer: *Dr.* __________

Copyright © 2020, Maharshi Dayanand University, ROHTAK

All Rights Reserved. No part of this publication may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means; electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the written permission of the copyright holder.

Maharshi Dayanand University
ROHTAK – 124 001

ISBN :

Price : Rs. ..../-

Publisher: Maharshi Dayanand University Press

Publication Year : 2021

विषय–सूची

इकाई 4 रघुवीर सहाय 4–50

इकाई की रूपरेखा

4.0 परिचय

4.1 इकाई के उद्देश्य

4.2 रघुबीर सहाय का जीवन एवं रचना–संसार

4.2.1 रघुवीर सहाय : जीवन परिचय

4.2.2 रघुवीर सहाय : रचना–संसार

4.3 व्याख्या भाग

4.3.1 पढ़िए गीता

4.3.2 किले में औरत

4.3.3 बड़ी हो रही है लड़की

4.3.4 रामदास

4.3.5 पैदल आदमी

4.3.6 पानी–पानी, बच्चा–बच्चा

4.4 स्वातंत्र्योत्तर युग और रघुवीर सहाय की कविता

4.5 रघुवीर सहाय का राजनीतिक परिप्रेक्ष्य

4.6 रधुवीर सहाय की कविताओ में सामाजिक यथार्थ

4.7 रघुवीर सहाय का काव्य–वैशिष्ठ्य

4.8 सारांश

4.9 मुख्य शब्दावली

4.10 'अपनी प्रगति जांचिए' के उत्तर

4.11 अभ्यास हेतु प्रश्न

4.12 आप ये भी पढ़ सकते हैं।

इकाई 4 रघुवीर सहाय

इकाई की रूपरेखा

4.0 परिचय

4.1 इकाई के उद्देश्य

4.2 रघुबीर सहाय का जीवन एवं रचना–संसार

 4.2.1 रघुवीर सहाय : जीवन परिचय

 4.2.2 रघुवीर सहाय : रचना–संसार

4.3 व्याख्या भाग

 4.3.1 पढ़िए गीता

 4.3.2 किले में औरत

 4.3.3 बड़ी हो रही है लड़की

 4.3.4 रामदास

 4.3.5 पैदल आदमी

 4.3.6 पानी–पानी, बच्चा–बच्चा

4.4 स्वातंत्र्योत्तर युग और रघुवीर सहाय की कविता

4.5 रघुवीर सहाय का राजनीतिक परिप्रेक्ष्य

4.6 रधुवीर सहाय की कविताओ में सामाजिक यथार्थ

4.7 रघुवीर सहाय का काव्य–वैशिष्ठ्य

4.8 सारांश

4.9 मुख्य शब्दावली

4.10 'अपनी प्रगति जांचिए' के उत्तर

4.11 अभ्यास हेतु प्रश्न

4.12 आप ये भी पढ़ सकते हैं।

4.0 परिचय

कवि एक संवेदनशील प्राणी होता है। वह अपने परिवेश से अनुभूतियों को ग्रहण करता है और उन अनुभूतियों को आत्मसात् करके, संवेद्य बनाकर काव्य के रूप में समाज को परोस देता है। अतः उसका काव्य अपने युगबोध का आइना होता है। श्री रघुबीर सहाय स्वातंत्र्योत्तर युग के कवियों में अग्रगण्य हैं। उनके काव्य में तत्कालीन स्थितियों एवं परिस्थितियों का जीवन्त लेखा – जोखा उपलब्ध है। प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार, जनसामान्य की लाचारी, लचर

न्याय – व्यवस्था, म्रियमाण मर्यादाएं, चीखती मानवता, काच्चे काटते राजनीतिज्ञ, मुँह बाए खड़ी सामाजिक समस्याएँ, हत्या, लूटपाट आदि सभी घटनाएँ उनके काव्य में अनुस्यूत हैं। अपने युग की समस्त ऊहापोह से उनका काव्य अनुप्राणित है। स्वातंत्र्योत्तर युग के समाज की सुखद – दुःखद सभी अनुभूतियां उनके काव्य में संजोई गई हैं।

4.1 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

रघुवीर सहाय के जीवन के विविध आयामों से परिचित हो पाएंगे।

रघुवीर सहाय की रचना – प्रक्रिया से अवगत हो पांएगे।

रघुवीर सहाय के काव्य में अनुस्यूत मानवीय मूल्यों से साक्षात् भेंट कर सकेंगे।

रघुवीर सहाय के काव्य में चित्रित सामाजिक चेतना एवं प्रशासनिक व्यवस्था का कच्चा चिट्ठा पढ़ पाएंगे।

रघुवीर सहाय के काव्य की प्रासंगिकता को जान पाएंगे।

रघुवीर सहाय के काव्य– सौष्ठव से अवगत हो पाएंगे।

4.2 रघुवीर सहाय का जीवन एवं रचना – प्रक्रिया

4.2.1 रघुवीर सहायः जीवन – परिचय

रघुवीर सहाय स्वात़ंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य के एक देदीप्यमान सितारे थे। इनका जन्म 9 दिसम्बर, 1929 को उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध नगर लखनऊ में हुआ इन्होंने सन 1951 में लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय में एम. ए. की उपाधि प्राप्त की। साहित्य – सृजन तो इन्होंने अपने अध्ययन काल में ही 1946 में आरम्भ कर दिया था। ये बड़े स्वाभिमानी एवं स्वावलम्बी स्वभाव के थे। परिश्रम में इनका दृढ़ विश्वास था। अतः विद्यार्थी जीवन में ही ये 1949 में दैनिक नवजीवन अखबार से जुड़ गए। पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रखर प्रतिभा के बल पर, ये 1951 के आरम्भ तक वहां उप संपादक एवं सांस्कृतिक संवाददाता के रूप में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे।

रोटी – रोजी की तलाश में सन् 1951 में ये दिल्ली आ गए। यहां 1951 से 1952 तक 'प्रतीक' के सहायक सम्पादक रहे। इससे पहले इनकी 14 कविताएँ, अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'दूसरा सप्तक' में प्रकाशित हो चुकी थी। सन् 1953 से 1957 तक ये आकाशवाणी दिल्ली के समाचार विभाग में उप संपादक रहे। इसी दौरान सन् 1955 में इनका विवाह विमलेश्वरी सहाय से हो गया, जिससे सन् 1960 में इनके घर नन्हीं परी मंजरी का जन्म हुआ। कालान्तर में मंजरी ने हेम जोशी को अपना जीवन साथी बनाया तथा दिल्ली दूरदर्शन पर 'मंजरी जोशी' के नाम से एक उद्घोषिका के रूप में अपनी पहचान बनाई।

इसके बाद, ये हैदराबाद से निकलने वाली पत्रिका 'कल्पना' से जुड़ गए। तत्पश्चात् इन्होंने कुछ समय तक 'नवभारत टाइम्स' के सहायक संपादक की भूमिका निभाई। फिर 1969 से 1982 तक ये दिनमान साप्ताहिक के प्रधान सम्पादक रहे। सन् 1982 से 1990 तक इन्होंने स्वतंत्र लेखन किया।

सन् 1982 में 'लोग भूल गए हैं' नामक इनकी काव्य कृति पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से अलंकृत किया गया। 30 दिसम्बर 1990 को इस जानेमाने कवि, प्रखर पत्रकार एवं सुधी समालोचक का दिल्ली में स्वार्गवास हो गया। रघुवीर सहाय केवल एक प्रबुद्ध साहित्यकार ही नहीं वरन् एक निडर एवं साहसी पत्रकार भी थे। उन्होंने हिंदी पत्रकारिता को एक सुदृढ़ एवं सार्थक आधार प्रदान किया। वे सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन लाने के लिए जी – जान से निरन्तर जुटे रहे। वे लोकतंत्र के प्रबल समर्थक थे, किन्तु उस समय जो कुछ घटित हो रहा था, वह उन्हें फूटी आँखों नहीं सुहाता था। उन्होंने देखा कि लूटपाट, मारधाड़, भ्रष्टाचार, अराजकता

असमानता, विद्रूपता, विघटन आदि दुष्प्रवृत्तियों के पौ बारह थे। जिसे देखकर वे व्यथित, व्यग्र, कुपित एवं क्षुब्ध हो उठते थे। उनकी यह बेचैनी एवं उद्विग्नता उनके समस्त काव्य में परिलक्षित होती है।

4.2.2 रघुवीर सहाय : रचना संसार

आधुनिक हिन्दी कविता के सशक्त स्तंभ, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, प्रखर पत्रकार, महान चिंतक, नई कविता के चर्चित हस्ताक्षर रघुवीर सहाय का हिंदी साहित्य में एक विशिष्ट योगदान है। इनके साहित्य को हिन्दी – जगत् ने खूब चाहा एवं सराहा है।

उन्होंने काव्य – साधना के अतिरिक्त, कहानी, निबन्ध, उपन्यास एवं अनुवाद के क्षेत्र में यथेष्ट योगदान दिया है, जिसे इस प्रकार दर्शाया जा सकता हैः

'दूसरा सप्तक' (सन् 1951), सीढ़ियों पर धूप में (सन् 1960), आत्महत्या के विरूद्ध (सन 1967), हंसों – हंसो : जल्दी हंसो (सन् 1975), लोग भूल गए हैं (सन् 1982), कुछ पते कुछ चिटिठयाँ (सन् 1989), एक समय था (संपादक सुरेश शर्मा), प्रतिनिधि कविताएं (सन् 1994, सम्पादक सुरेश शर्मा)। पता चला है कि रघुवीर सहाय का समस्त साहित्य 'रघुवीर सहाय रचनावली' के नाम से प्रकाशित हो चुका है।

निर्दिष्ट काव्य – कृतियों के अतिरिक्त उनकी निम्नलिखित गद्य रचनाएं भी प्रकाशित हो चुकी हैः

कहानी–संग्रहः (क) रास्ता इधर से है (ख) जो आदमी हम बना रहे हैं।

निबन्ध – संग्रह :– (क) दिल्ली मेरा परदेश (ख) लिखने का कारण (ग) ऊबे हुए सुखी (घ) भंवर, लहरें और तरंग। (ङ) वे और नहीं होगे जो मारे जाएंगे।

उपन्यास – कोठरी की कैद

अनुवाद – राख और हीरे (पोलिश उपन्यास) 'वरनम वन' (मैकबेथ, शेक्सपियर) शीर्षक से हिन्दी में अनुवाद प्रकाशित हुआ।

इन रचनाओं के साथ – साथ इन्होंने बहुत – सा बाल – साहित्य एवं दूरदर्शन के लिए भी अनेक पट कथाएँ लिखी।

रघुवीर सहाय के काव्य – संग्रह 'दूसरा सप्तक' से लेकर 'एक समय था' तक की रचनाओं का अनुशीलन करके कहा जा सकता है कि उनकी ये कविताएँ उनके काव्य – विकास के विविध सोपान हैं। समय और स्थितियों के अनुसार रचित उनकी ये कालजयी कविताएँ उनके भावप्रवण एवं करूणा – कलित व्यक्त्वि को सहज ही उद्‌भासित करती हैं।

'दूसरा सप्तक' में उनकी 14 कविताएँ संगृहीत हैं, जिनमें से अधिकांश कविताएँ जीवन के सामान्य आयामों से सम्पृक हैं तथा जन–जीवन के विविध चित्रों को रेखांकित करती हैं। 'सीढ़ियों पर धूप में' काव्य – संग्रह की कविताओं में कवि के अनेक मधु–तिक्त अनुभव मुँह बोलते से जान पड़ते हैं। इस संकलन में प्रकृति, धूप, पेड़–पौधे, सुगन्ध, पुष्प बसन्त, मां, गौरैया, प्रेम, सौन्दर्य तथा नारी विषयक अनेक कविताएँ संयोजित हैं। 'आत्महत्या के विरूद्ध' काव्य – संग्रह रघुवीर सहाय की काव्य – यात्रा का एक महत्त्वपूर्ण सोपान है। इसमें आम आदमी की व्यथा – कथा, उसका दर्द, उसकी बेबसी बड़े मर्मान्तक ढंग से व्यंजित हुई है। लोकतंत्र की विडम्बना, राजनीतिक ऊहापोह, मतदाता की निरीहता, देश के भ्रष्ट नेताओं की कारगूजारियां, उनका कच्चा चिट्ठा खोलने का प्रशस्य प्रयास इस कृति का केन्द्र बिन्दु है। ऐसी कविताओं के अतिरिक्त स्त्री, प्रेम एवं प्रकृति संबंधी कुछ अन्य रचनाएँ भी इस संग्रह में समाहित हैं। ''हंसो – हंसो : जल्दी हंसों' का अधिकांश प्रतिपाद्य भारत की सुत्सित राजनीति से जुड़ा हुआ है। इस संग्रह में जनसामान्य की विवशता, अकेलेपन की कचोट, भय एवं संत्रास की स्थिति बड़े प्रभावात्मक

ढंग से उकेरी गई है। 'लोग भूल गए हैं' उनकी साहित्य अकादमी से पुरस्कृत कृति है, जिसमें राजनीतिक चेतना एवं सामाजिक यथार्थ का मार्काख़ेज चित्रण हुआ है। इस काव्यकृति में नारी की पीड़ा एवं उसकी दयनीय दशा मानो मूर्तिमन्त हो उठी है। इस कृति में लगभग 15 कविताएँ ऐसी हैं जो नारी की भयावह स्थिति एवं उसके सामाजिक तिरस्कार की गवाही देती हैं। 'कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ' नामक रचना में सामाजिक एवं राजनीतिक सरोकारों को उजागर करने का सार्थक प्रयास किया गया है। 'प्रतिनिधि कविताएँ' पुस्तक का सम्पादन सुरेश शर्मा ने किया है। इस कृति में उनकी पूर्वरचित रचनाओं में से 144 कविताएँ संयोजित की गई हैं। 'एक समय था' सहाय जी की अन्तिम काव्य – कृति है, जिसमें उनके जीवन के आखरी चार – पाँच वर्षों में लिखी गई अप्रकाशित रचनाओं को प्रतिपादित किया गया है। इस पुस्तक को सुरेश शर्मा ने संपादित किया है।

रघुवीर सहाय एक ऐसे प्रगतिशील कवि थे जो प्रेरणा के लिए अतीत में झांकने की अपेक्षा भविष्योन्मुखी रहना अधिक पसन्द करते थे। उनकी काव्य–रचना में उनकी पत्रकार – दृष्टि का भी सृजनात्मक रूप में सदुपयोग हुआ है। उनकी मान्यता रही है कि खबरों में दबी और छिपी अनेक ऐसी बातें होती हैं, जिनमें मानवीय पीड़ा छिपी रह जाती है। उस छिपी हुई मानवीय पीड़ा को लोगों के सामने उजागर करना ही कविता का दायित्व है।

इस काव्य – दृष्टि के अनुसार ही उन्होंने अपनी नई काव्य– भाषा का विकास किया है। उनकी काव्य – भाषा सटीक, दो टूक और विवरण – प्रधान है, जिसमें आँचलिक भाषा के मार्मिक शब्दों का सम्यक् प्रयोग किया गया है। वे आलंकारिक भाषा एवं अनावश्यक शब्दों के प्रयोग से बचते रहे हैं। भयाक्रांत अनुभव की आवेग रहित अभिव्यक्ति उनकी कविता की प्रमुख विशेषता रही है। उन्होंने मुक्त छन्द के साथ – साथ छन्दयुक्त काव्य की भी रचना की है।

मूल्यांकन :

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी के नव्यतम काव्य में मूल्य – चेतना को उजागर करने वाले कवियों में रघुवीर सहाय का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। समाज की सुधड़ एवं कुधड़ स्थितियों को उन्होंने उनके यथार्थ रूप में चित्रित किया है। उन्होंने ने कम से कम शब्दों में पूरी मितव्ययता के साथ अपने कटु अनुभव, युगीन परिवेश, अनावश्यक आडम्बर, आम आदमी की छोटी – छोटी अतृप्त आकाक्षाएँ, असफलताएँ, स्वप्न क्रियाएं, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक विद्रूपता व विजड़ित किंकर्त्तव्यविमूढ़ता के बीच फंसे, दुमुहे, दुरंगे सुविधाभोगी अवसरवादी श्रीमन्तों की कारगुजारियों को ध्यान में रखते हुए व्यक्त किया है। सीधी सपाट जनसंबोधिनी भाषा में उन्होंने पाठक के समक्ष एक विवादास्पद संवाद छेड़ा है। पाठक और कविता के बीच उन्होंने जो सम्बन्ध स्थापित किया, वह स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद की आधुनिक कविता में एक अप्रतिम प्रतिमान बन गया। भाव – भाषा सब कुछ सर्वग्राह्य हो गया।

'अपनी प्रगति जांचिए'

1. रघुवीर सहाय का जन्म कब हुआ?

   (क) सन् 1907 में (ख) सन् 1912 में

   (ग) सन् 1929 में (घ) सन् 1936 में

2. 'दूसरा सप्तक' कब प्रकाशित हुआ?

   (क) 1940 में (ख) 1942 में

   (ग) 1952 में (घ) 1951 में

3. रघुवीर सहाय का जन्म कहां हुआ?

(क) लखनऊ में (ख) बरेली में

(ग) बनारस में (घ) जयपुर में

4. रघुवीर सहाय की किस रचना पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला?

(क) सीढ़ियों पर घूप में (ख) लोग भूल गए हैं

(ग) आत्महत्या के विरूद्ध (घ) एक समय था

5. रघुवीर सहाय ने शक्सपियर के किस नाटक का हिन्दी में अनुवाद किया?

(क) टेम्पैस्ट (ख) मैकबेथ

(ग) ऐज यू लाइक इट (घ) मर्चैंट आफ विनश

6. रघुवीर सहाय की पत्नी का क्या नाम है?

(क) महालक्ष्मी (ख) महामाया

(ग) रामेश्वरी (घ) विमलेश्वरी

4.3 व्याख्या भाग

4.3.1 पढ़िए गीता

पढ़िए गीता
बनिए सीता
फिर इन सबमें लगा पलीता
किसी मूर्ख की हो परिणीता
निज घरबार बसाइए।
होंय कँटीली
आँखें गीली
लकड़ी सीली, तबियत ढीली
घर की सबसे बड़ी पतीली
भरकर भात पसाइए।

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ 'पढ़िए गीता' नामक कविता से ली गई हैं, जिसके रचयिता रघुवीर सहाय हैं। मूलतः यह कविता उनके काव्य – संग्रह 'सीढ़ियों पर धूप में' में संकलित है।

प्रसंग –भारतीय संस्कृति का पवित्र एवं आदर्श ग्रंथ गीता है, जिसे पढ़कर भारतीय नारी सीता की भाँति कर्त्तव्यपरायण एवं आदर्श का प्रतिमान बन सकती है, चाहे उसे जीवन में कितनी ही कठिनाइयों का सामना करना पड़े।

व्याख्याः—वस्तुतः इस कविता में भारतीय नारी के जीवन की विडम्बना को दर्शाया गया है। पहले तो उसे गीता जैसी जीवनोपयोगी पुस्तक को पढ़कर सीता की तरह शालीन एवं सुयोग्य बनने का परामर्श दिया गया है। इस के पश्चात् किसी मूर्ख मनुष्य की पत्नी बनकर घर बसाने का सुझाव दिया गया है। इसका निहितार्थ है कि भारत में सुयोग्य एवं सुशिक्षित नारी को भी निखट्टू एवं महामूर्ख पति के पल्ले बांध दिया जाता है। वस्तुतः यहां नारी की निरीह एवं दयनीय दशा को दर्शाया गया है। उसे पढ़लिख कर भी विकट परिस्थितियों में चूल्हा जलाना पड़ता है। गीले ईंधन से आग नहीं जलती, धुएँ के कारण उसकी आँखों से पानी बहने लगता है, फिर भी उसे पूरे परिवार के लिए बड़ा पतीला भरकर भात पकाना पड़ता है और उस भात को परिवार में परोसने का दायित्व भी उसी पर रहता है।

विशेषः 1. इस कविता में भारतीय नारी के जीवन पर करारा व्यंग्य है।

2. पौराणिक आख्यान का उल्लेख करके बताया गया है कि नारी की नियति ही ऐसी रही है। वह कभी से पिसती रही है। आज भी उसके भाग्य में यही बदा है।

3. भाषा सीधी सपाट एवं सुग्राह्य है।

4. नारी – जीवन का सूत्रात्मक वर्णन प्रशंसनीय है।

4.3.2 किले में औरत

उस घर में बीस औरते थीं
उनमें थी सिर्फ एक बुढ़िया
प्यारी बुढ़िया प्यारी बुढ़िया
वे धोती थीं, वे मलती थीं, वे हँसती थीं
वे घुसती और दुबकती थीं
वे माँग जिस समय भरती थीं
तब कितना धीरज धरती थीं
वे सब दोपहर में एक किले पर
पहरा देती सोती थीं
वे ठिगनी थीं वे दुबली थीं
वे लम्बी थीं वे गोरी थीं

सन्दर्भः— प्रस्तुत पंक्तियां 'किले में औरत' नामक कविता से ली गई हैं। यह कविता मूलतः कविवर रघुवीर सहाय के काव्य – संग्रह 'हंसो – हंसो जल्दी हंसो' में संकलित है।

प्रसंगः कवि कभी किसी किले नुमा होटल में ठहरा था, उसने वहां वेश्यावृत्ति के लिए कैदी बनाई गई स्त्रियों की दयनीय दशा को देखा तो उनके ह्रदय से यह कविता निसृत हुई।

व्याख्याः— भारत में नारी को देवी तुल्य बताया गया है। वहीं विवश नारी को किस प्रकार का नारकीय जीवन जीना पड़ता है, इसका जीवन्त प्रमाण दिया गया है, इस कविता में। उस होटल में जहां कभी कवि ठहरा था, बीस औरतें थीं। उनमें अधिकांश युवतियाँ नवयौवना थीं जबकि एक बूढ़ी और भी वहां उनके संग रहती थी। वे उस बुढिया को बहुत प्यार करती थीं। वे वहां नहाती थीं, अपने कपड़े धोती थीं, कभी परस्पर हंसती थीं, कभी सहमी – सहमी रहती थीं। वे संभवतः विवाहिताएँ थीं, इसलिए चोरी – छुपके अपनी मांग में सिन्दूर भी भरती थीं। उन्हें इस बात का भय

रहता था कि कहीं होटल का मालिक उनकी इन क्रियाओं को देख न ले। ये सब औरतें दोपहर के समय किले पर पहरा देती थीं अर्थात् अपनी भाव–भंगिमाओं से वहां आने वाले पुरूषों को फुसलाने का प्रयास करती थी और फिर वहीं सो जाती थीं। उनमें से कुछ औरतें छोटे कद की थी, कुछ छरहरी थी, कुछ लम्बे कद की थी तो कुछ गोरे रंग की थी। तात्पर्य यह है कि ग्राहकों की रूचि के अनुसार हर प्रकार का माल उपलब्ध था।

विशेषः 1. भारत के होटल केवल भोजनालय ही नहीं, वेश्यालय भी हैं, जहां ग्राहकों को भोजन के अतिरिक्त जिस्म भी परोसे जाते हैं।

2. नारी को पूज्या मानने वाले भारत में नारी की क्या हालत है, यह दिखाने में कवि को सफलता मिली है।

3. भाषा भावानुकूल सरल एवं तरल है।

4. नारी – जीवन का व्यंग्यात्मक यथार्थ चित्रण पाठक को झकझोरने वाला है।

वे कभी सोचती थीं चुपचाप न जाने क्या
वे कभी सिसकती थीं अपने सबके आगे
उस दिन बुढ़िया पड़ी
मर्दों ने कहा औरतों की बीमारी है
वह बुढ़िया औरत के रहस्य
उन बीस जनों के औरतपन–की गठरी बन
कोने में खटिया पर जा करके पहुड़ रही
वह पहुड़ी रही साल भर तक फिर गुजर गई
औरतें उठीं घर धोया मर्द गए बाहर
अरथी लेकर

सन्दर्भ :– प्रस्तुत पंक्तियां रघुवीर सहाय द्वारा रचित 'किले में औरत' नामक कविता से अवतरित हैं। यह कविता कवि के काव्य – संग्रह 'हंसो – हंसो जल्दी हंसो' में संकलित है।

प्रसंग – कवि ने कभी किसी होटल में औरतों की जिस्म – फरोशी को देखा था, जो कविता में एक बिम्ब बनकर उतर आया। यहां कवि ने उन औरतों का मनोवैज्ञानिक चित्रण करने के साथ – साथ वृद्ध वेश्या की दुःखद मृत्यु का सहज एवं संवेदनापूर्ण दृश्य प्रस्तुत किया है।

व्याख्याः– किले में बन्द औरतें कभी चुपचाप कुछ सोचती हैं, पर वे क्या सोचती हैं, यह कोई नहीं जानता। वे कभी आपस में रो–रो कर एक दूसरी को अपना दुखड़ा सुनाती हैं। एक दिन वह बुढ़िया निढ़ाल होकर गिर पड़ी तो लोगों ने कहा इसे कोई औरतों की बीमारी है। वह बुढ़िया उन औरतों के सब राज जानती थी अर्थात् वह जानती थी कि इन में से कब कौन वहां आई, क्यों आई और उसने वहां आकर क्या – क्या किया। बेचारी वार्धक्य से जर्जर बुढ़िया वहां कोने में पड़ी एक टूटी खाड़ पर जा पसरी। वह वहां एक साल तक पसरी रही। इसके बाद उसके प्राण पंखेरू ज़ड गए। वहां मौजूद लोग उसे अरथी पर लेटा कर श्मशान ले गए। तत्पश्चात् उन औरतों ने उठकर उस घर (होटल) को धोया।

विशेषः 1. इस पद्यांश में किले में बन्द औरतों की बेबसी का सांगोपांग चित्रण हुआ है।

2. बुढ़िया की मृत्यु पर संवेदनाहीन दृश्य तथाकथित ह्रदयहीन लोगों के मुँह पर करारा तमाचा है।

3. भारतीय लोकतंत्र की बखियां उधड़ती नज़र आती है।

4. भाषा भावानुकूल सीधी सपाट है।

5. बुढ़िया का इस प्रकार गुजर जाना वेश्याजीवन की अन्तिम परिणति को उजागर करता है।

4.3.3. बड़ी हो रही है लड़की

जब वह कुछ कहती है
उसकी आवाज़ में
एक कोई चीज
मुझे एकाएक औरत की आवाज लगती है जो
अपमान बड़े होने पर सहेगी
वह बड़ी होगी
डरी और दुबली रहेगी
और मैं न होऊँगा
वे किताबें व उम्मीदें न होंगी
जो उसके बचपन में थीं
कविता न होगी साहस न होगा
एक और ही युग होगा जिसमें ताकत ही ताकत होगी
और चीख न होगी।

सन्दर्भ : प्रस्तुत पंक्तियां रघुवीर सहाय द्वारा रचित 'बड़ी हो रही है लड़की' नामक कविता से ली गई हैं। यह कविता उनके काव्य – संग्रह 'हंसो–हंसो जल्दी हंसों' में संकलित है।

प्रसंग : कवि ने अपनी लड़की को बड़ी होते हुए देखकर अनुमान लगाया है कि यह पूर्ण स्त्री बनने पर दुखी, लाचार एवं प्रताड़ित जीवन व्यतीत करेगी क्योंकि उसके बचपन में उसे एक निरीह नारी के लक्षण परिलक्षित होते हैं।

व्याख्याः– कवि कहता है कि जब उसकी छुटकी कुछ बोलती है तो उसे उसकी आवाज में एक अज़ीब सी निरीहता अनुभव होती है। उसे लगता है कि उसके व्यक्तित्व का समुचित विकास नहीं होगा। उसकी भावनाएँ कुंठित एवं दमित रहेंगी। उसे ससुराल में प्रताड़ना सहन करनी पड़ेगी, क्योंकि वह अपने स्वजनों के सम्मुख अपना मुँह नहीं खोल पाएगी। अपने अन्तर्मन की पीड़ाओं को घुट–घुट कर स्वयं ही पीती रहेगी। जब वह विकट परिस्थितियों में अपना विवाहित जीवन गुजारेगी तब मैं नहीं रहूँगा और न ही ये पुस्तकें रहेंगी, जिनसे वह प्रेरणा पाती थी। तब उसके जीवन में केवल बचपन की यादें रह जाएंगी जो उसे बार – बार कचोटेंगी, उसका सुनहला बचपन याद दिलाएंगी, उसे रूलाएंगी। उस समय स्थितियां बदल चुकी होंगी, उस युग में केवल ताकत का ही बोलबोला होगा, तब वह खुलकर रो भी नहीं पाएगी। उसे ढाढस दिलाने वाला कोई नहीं होगा, ना मैं, ना बचपन में उसे उत्फुल्ल करने वाली कविताएँ। एक कटु यथार्थ उसे दुर्भाग्य की मारी अबला समझकर उत्पीड़ित करता रहेगा और वह उफ़ तक नहीं कर पाएगी।

विशेष 1. भारतीय समाज में सैद्वान्तिक रूप में तो नारी को परमपूज्या दर्शाया गया है पर व्यवहारिक रूप में उसे सदा पाँव की जूती ही समझा जाता रहा। कवि इसीलिए – सुशिक्षित एवं प्रबुद्ध होते हुए भी

अपनी लाड़ली बेटी के भविष्य के प्रति आशंकित है।

2. यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि स्त्री स्वभाव से ही दयनीय होती है।

3. भाषा सहज, सरल एवं भावानुकूल है।

लम्बी और तगड़ी बेधड़क लड़कियाँ

धीरत की पुतलियाँ

अपने साहबों को सलाम ठोंकते मुसाहबों को ब्याहकर

आ रही होंगी जा रही होंगी

वह खड़ी लालच में देखती होगी उनका कद

एक कोठरी होगी

और उसमें एक गाना जो खुद गाया नहीं होगा किसी ने

कैदी से छीनकर गाने का हक दे दिया गया होगा वह गाना

कि उसे जब चाहे तब नहीं जब वह बजे तब सुनो

बार–बार एक–एक अन्याय के बाद वह बज उठता है

सन्दर्भः– यह पद्यांश रघुवीर सहाय द्वारा रचित ''बड़ी हो रही है लड़की'' नामक कविता से उद्धृत है। मूलतः यह कविता उनके काव्य – संग्रह 'हंसो–हंसो जल्दी हंसो' में संचलित है।

प्रसंग : यहां कवि अपनी लाड़ली बेटी के विवाहोपरान्त की स्थिति पर विचार करता है और सोचता है कि उसकी लड़की का विवाहित जीवन कैसे गुजरेगा।

व्याख्याः– जब कवि की बेटी बड़ी होकर ससुराल जाएगी तो वह वहां उन लम्बी–लम्बी एवं सुदृढ़ शरीर वाली निडर एवं धैर्यशील लड़कियों को देखेगी, जिनका विवाह उन चापलूस कर्मचारियों से हुआ होगा जो अपने अफसरों की डाँट खाकर तथा उनकी जी – हजूरी करके अपने को बहुत बड़ा मानते होंगे। वे दबंग लड़कियाँ कभी अपनी ससुराल से पीहर आएंगी और कभी अपने पीहर से ससुराल जाएंगी। इस एक स्थान से दूसरे स्थान पर उनका आना–जाना बना रहेगा। कवि की लाडली बेटी उनकी जीवन – शैली को देखकर लालचवश सोचती होगी कि काश, उसके भाग्य में भी यह सब बदा होता। पर उसे तो विवाहोपरान्त एक छोटी – सी कोठरी में अपना गुजारा करना पड़ेगा, जहां सुख–सुविधा की कोई व्यवस्था नहीं होग ी। वहां कभी–कभार एक ऐसा गाना बजेगा, जो उसने नहीं कभी किसी कैदी ने गाया होगा। वह गाना भी वह अपनी इच्छानुसार जब चाहे तब नहीं सुन सकेगी, जब कभी सबके लिए उस गाने का प्रसारण हो रहा होगा तभी वह उस गाने को सुन पाएगी। हां, जब कभी उस पर अत्याचार होगा, उसके साथ अन्याय होगा तो वह गाना अवश्य बजेगा।

विशेषः 1. कवि ने यहां मनुष्य के दोहरे चरित्र को उद्घाटित करने का सार्थक प्रयास किया है। चापलूस लोग अपने साहबों के तलवे चाट कर बाहर किस अकड़ के साथ चलते हैं, यह देखने वाली बात है।

2. केवल डील–डौल वाली स्वस्थ लड़कियों को ही बुद्धि–जीवी पति मिल सकते हैं।

3. विवाहिता लड़की को अपनी ससुराल में मन मसोस कर रहना पड़ता है। वह अपनी इच्छानुसार रेडियो या टेलिविजन से अपना मनोरंजन नहीं कर सकती।

4. भाषा सहज, सरल एवं भावानुकूल है।

5. अनायास ही अनुप्रास एवं वीप्सा अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

वह सुनती होगी मेरी याद करती हुई
क्योंकि हम कभी–कभी साथ–साथ गाते थे
वह सुर में मैं सुर के आसपास
एक पालना होगा
वह उसे देखगी और अपने बचपन की यादें आएंगी
अपने बचपन के भविष्य की इच्छा
उन दिनो कोई नहीं करता होगा
वह भी न करेगी

सन्दर्भ– प्रस्तुत पद्यांश रघुवीर सहाय द्वारा रचित 'बड़ी हो रही है लड़की' नामक कविता से उद्धृत किया गया है। यह कविता मूलतः उनके काव्य – संग्रह 'हंसो–हंसो जल्दी हंसो' में संकलित है।

प्रसंगः कवि कल्पना करता है कि उसकी लड़की विवाहोपरान्त मां बनेगी, उसका बच्चा होगा, जिसे वह पालने में झुलाएगी। तब उसे अपना बचपन याद आएगा कि वह अपने बचपन में किस प्रकार पलना झूलती थी और आनन्द मग्न होकर सुरीला गाना गाती थी और उसके साथ ही उसके पिताजी भी वही गाना गुनगुनाते थे।

व्याख्या– कवि सोचता है कि विवाहोपरान्त उसकी बेटी अपनी ससुराल के एक छोटे – से कमरे में उस गीत को सुनती होगी, जिसे वह अपने पिता जी की संगति में गाया करती थी। वह तो सुर में गाती थी, पर पिता जी उसके सुर में सुर मिलाने का प्रयास करते थे। इस गीत के बोल उसके बचपन की मीठी यादों को ताजा करते होंगे। कालान्तर में वह मां भी बन गई होगी और अपने बच्चे को पालने में झुला रही होगी। उसे अपना बचपन याद हो आया होगा कि कभी वह भी अपने घर में इसी प्रकार अपने माता – पिता की दुलारभरी छत्रछाया में पालने में झूला करती थी। बड़ी होने पर गृहस्थ का दायित्व संभालने पर यह कोई नहीं सोचती होगी कि उसका बचपन फिर से लौट आए। वह भी ऐसा नहीं सोचती होगी। तात्पर्य यह है कि ससुराल में बिसूरती हुई, स्नेह – पालिता लड़की अपने मन की व्यथा – कथा किस से कहे।

विशेषः 1. कवि ने मानव मनोविज्ञान के अनुसार यह ज्ञापित करने का प्रयास किया है कि प्रौढ़ – अवस्था में अपने बच्चों के बचपन को देखकर उसे भी अपना बीता हुआ बचपन याद आ जाता है।

2. भाषा सरल, सहज एवं भावानुकूल है।

3. सटीक शब्द – चयन से अभिव्यक्ति सशक्त हुई है।

4. पुनरूक्तिप्रकाश, अनुप्रास एवं स्मरण अलंकारों का अनायास प्रयोग बहुत सुन्दर बन पड़ा है।

4.3.4 रामदास

चौड़ी सड़क गली पतली थी
दिन का समय घनी बदली थी
रामदास उस दिन उदास था
अंत समथ आ गया पास था
उसे बता यह दिया गया था उसकी हत्या होगी।

धीरे धीरे चला अकेले

सोचा साथ किसी को ले ले

फिर रह गया, सड़क पर सब थे

सभी मौन थे सभी निहत्थे

सभी जानते थे यह उस दिन उसकी हत्या होगी।

सन्दर्भ :– प्रस्तुत पद्यांश रघुवीर सहाय द्वारा रचित 'रामदास' नामक कविता से लिया गया है। यह कविता मूलतः उनके काव्य– संग्रह 'हंसो हंसो जल्दी हंसो' में संकलित है।

प्रसंग – इस कविता में भारतीय लोकतंत्र पर करारा व्यंग्य है। कवि ने स्पष्ट किया है कि कानून के अनुसार अपना जीवन यापन करने वाले लोग किस प्रकार गुण्डागर्दी का शिकार होते हैं, उनकी सरेआम हत्या कर दी जाती है और समाज निर्विकार भाव से उदासीनतापूर्वक ऐसे जघन्य अपराध को मूक बनकर देखता रहता है। यहां 'रामदास' एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक सुसभ्य समाज के शालीन वर्ग का प्रतिनिधि है।

व्याख्याः– यहां कवि ने भारतीय लोकतंत्र में चहुंदिश व्याप्त अराजकता की यथार्थ स्थिति को चित्रित करने का सार्थक प्रयास किया है। कवि कहता है कि गुण्डे सरेआम घोषणा करके भारत के न्यायप्रिय लोगों की हत्या कर रहे हैं। ऐसे ही आँखों देखे, नृशंस हत्या के एक दृश्य को कवि ने रूपायित किया है। अपने जीवन की अन्तिम घड़ियों को जानते हुए भी रामदास एक चौड़ी सड़क से निकलती हुई संकरी गली से गुजर रहा था। दिन का समय था और आसमान में घने काले बादल छाए हुए थे। रामदास उस दिन उदास था, उसके चेहरे पर मुर्दनी छाई हुई थी क्योंकि वह जानता था कि आज उसकी हत्या होगी। पहले तो वह अकेला ही धीरे – धीरे चल रहा था, उसने एक बार सोचा भी कि किसी को साथ ले ले, किन्तु फिर अकेला ही चल पड़ा। सड़क पर बहुत लोग आ – जा रहे थे। वे सब के सब निशस्त्र थे तथा खामोशी से यह सब देख रहे थे। वे सब जानते थे कि आज रामदास की हत्या होगी।

विशेषः 1 कवि ने यह स्पष्ट करने का सार्थक प्रयास किया है कि वर्तमान अराजकतापूर्ण परिवेश में आम आदमी सुरक्षित नहीं है।

2. इसके साथ ही कवि ने इस तथ्य को भी रेखांकित किया है कि आज का समाज संवेदनाहीन हो गया है

3. भाषा बिम्बात्मक है। ऐसा लगता है रामदास की हत्या – प्रक्रिया की फिल्म हमारे सामने चल रही है।

4. सटीक शब्द – चयन के साथ – साथ अनुप्रास एवं वीप्सा अलंकारों का भी सुष्ठु प्रयोग हुआ है।

खड़ा हुआ वह बीच सड़क पर

दोनों हाथ पेट पर रखकर

सधे कदम रख करके आए

लोग सिमट कर आँख गड़ाए

लगे देखने उसको जिसकी तय था हत्या होगी।

निकल गली से तब हत्यारा

आया उसने नाम पुकारा
हाथ तौलकर चाकू मारा
छूटा लोहू का फ़व्वारा
कहा नहीं था उसने आख़िर उसकी हत्या होगी।
भीड़ ठेलकर लौट गया वह
मरा पड़ा है रामदास यह
देखो देखो बार बार कह
लोग निडर उस जगह खड़े रहे
लगे बुलाने उन्हें जिन्हें संशय था हत्या होगी।

सन्दर्भः प्रस्तुत पद्यांश रघुवीर सहाय द्वारा रचित 'रामदास' नामक कविता से उद्धृत किया गया है। यह कविता मूलतः उनके काव्य – संग्रह 'हंसो हंसो जल्दी हंसो' में संकलित है।

प्रसंग : कवि ने स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद भारत की प्रशासनिक व्यवस्था का कच्चा चिट्ठा खोलते हुए बताया है कि कहीं भी शासन का खौफ़ नहीं। चारों ओर गुण्डगर्दी फैली हुई है। भारत का न्यायप्रिय आम आदमी कहीं भी सुरक्षित नहीं है। गुण्डे ललकार कर, उसे पूर्व चेतावनी देकर सरेआम उसकी हत्या कर देते हैं और हमारा शासन एवं समाज उसे निर्विकार भाव से उदासीनतापूर्वक देखता रहता है। संवेदनाहीनता की हद हो गई। लोग मेषमाता की तरह निर्निमेष जघन्य हत्या को देखते रहते हैं। कोई चूँ तक नहीं करता।

व्याख्याः कवि कहता है कि रामदास अपने हाथ पेट पर रख कर सड़क के बीच में खड़ा हुआ था। तभी लोग सहज–सहज वहां आकर इकट्ठे हो गए और आँख गड़ा कर उस रामदास को देखने लगे, जिस की हत्या निश्चित रूप से होनी थी। तभी अचानक एक गुण्डा (हत्यारा) गली से निकला, उसने रामदास को आवाज दी। उसने हाथ जमाकर रामदास के पेट में चाकू घोंप दिया और उसके पेट से लहू, का फव्वारा फूट पड़ा। वह खून से लथपथ होकर वहीं गिर पड़ा। उसे पहले ही आगाह कर दिया गया था कि अन्ततः उसकी हत्या होगी।

हत्यारा रामदास की हत्या करके भीड़ को चीरता हुआ, लोगों को धकियाता हुआ साफ निकल गया। मूक जनता में कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। रामदास को बचाने के लिए कोई आगे नहीं आया। रामदास की लाश को वहां पड़ा देखकर लोग निडरतापूर्वक कह रहे थे कि देखो – देखो रामदास मरा पड़ा है। कुछ लोग उन लोगों को बुलाने चले गए, जिन्हें रामदास की हत्या होने में सन्देह था। अर्थात् जो लोग यह सोच रहे थे कि शायद रामदास की हत्या न भी हो।

विशेषः–1. कवि ने भारतीय लोकतंत्र की विडम्बना को बड़े प्रभावात्मक ढंग से अभिव्यंजित किया है। असामाजिक तत्त्वों को शासन का कोई डर – भय नहीं है।

2. भारतीय समाज भी संवेदनाहीन हो गया है। किसी आदमी को किसी दूसरे की कोई चिंता नहीं है। अन्यथा किसी एक गुण्डे की क्या मज़ाल कि वह जन–समूह के बीच किसी की ललकार कर हत्या कर दे।

3. सटीक शब्द–चयन है। मुहावरेदार भाषा से कथ्य सुग्राह्य हो गया है।

4. अनुप्रास एवं वीप्सा अलंकारों का सुष्ठु, प्रयोग हुआ है।

5. समस्त कविता बिम्बात्मक है, जिसमें घटनाक्रम एक फिल्म की भाँति दिखाई पड़ता है।

4.3.5 पैदल आदमी

जब सीमा के इस पार पड़ी थी लाशें
तब सीमा के उस पर पड़ी थीं लाशें
सिकुड़ी ठिठरी नंगी अनजानी लाशें
वे उधर से इधर आ करके मरते थे
या इधर से उधर जा करके मरते थे
यह बहस राजधानी में हम करते थे

सन्दर्भः प्रस्तुत पंक्तियां रघुवीर सहाय द्वारा रचित 'पैदल आदमी' नामक कविता से उद्‌धृत की गई हैं। यह कविता मूलतः उनके काव्य – संग्रह 'हंसो हंसो जल्दी हंसो' में संकलित है।

प्रसंग : इन पंक्तियों में दो विरोधी देशों के युद्धोपरान्त की स्थिति को रूपायित किया गया है। दोनों देशों की सीमा पर लोगों की लाशें बिखरी पड़ी हैं, पर कोई भी देश उन्हें अपने नागरिक मानने के लिए तैयार नहीं है।

व्याख्याः कवि भारत–पाक युद्ध के उपरान्त उपजी स्थिति का आकलन करते हुए कह रहा है कि सीमा पर दोनों ओर लाशों के अम्बार लगे हुए थे। कुछ लाशें सीमा के इस ओर थी कुछ लाशें उस ओर थी। ये लाशें सर्दी में ठिठुर कर सिकुड़ गई थी और नग्न थी। इन निर्वस्त्र सिकुड़ी हुई लाशों की कोई पहचान नहीं थी। एक प्रकार से ये लाशें लावारिस थी, क्योंकि किसी भी देश के अधिकारी इन्हें अपनाने के लिए तैयार नहीं थे। कुछ लोग इधर से जाकर उधर मरे तथा कुछ लोग उधर से आकर इधर मरे। पर उनकी पहचान को लेकर दोनों देशों की राजधानी में बहस चल रही थी।

विशेषः
1. कवि बताता है कि सीमा के दोनों ओर बिखरी लाशें निर्धन एवं बेरोजगार लोगों की थी, क्योंकि उनके तन पर वस्त्र नहीं थे।
2. दोनों ही देशों की सरकारें उन लाशों को अपनाने से इन्कार कर रही हैं, क्योंकि कहीं उनकी पोल न खुल जाए।
3. सटीक शब्द – चयन से अभिव्यक्ति सशक्त हुई है।
4. भाषा सरल, सहज एवं भावानुकूल है।

हम क्या रूख लेंगे यह इस पर निर्भर था
किसका मरने से पहले उनको डर था
भुखमरी के लिए अलग–अलग अफसर था
इतने में दोनों प्रधानमंत्री बोले
हम दोनों में इस बरस दोस्ती हो ले
यह कहकर दोनों ने दरवाजे खोले

सन्दर्भ : प्रस्तुत पंक्तियां रघुवीर सहाय द्वारा रचित 'पैदल आदमी' नामक कविता से उद्‌धृत हैं। यह कविता मूलतः उनके काव्य–संग्रह 'हंसो हंसो जल्दी हंसो' में संकलित है।

प्रसंग : युद्धोपरान्त सीमा के इधर – उधर पड़ी नंगी लाशों को किसी भी देश की सरकार अपना मानने के लिए

तैयार नहीं हैं, क्योंकि भुखमरी की शिकार ये नंगी लाशें उस देश की हो ही नहीं सकती। वहां तो लोगों की देखभाल और सुरक्षा के लिए अन्न – वस्त्र का पूरा प्रबन्ध है।

व्याख्या :– कवि कहता है कि दोनों ओर की सरकारें कह रही हैं कि लाशों के सम्बन्ध में कौनसा दृष्टिकोण अपनाया जाएगा, वह इस बात पर निर्भर करता है कि मरने से पहले उन्हें किस बात का डर था। दोनों ओर की सरकारों का दावा है कि भुखमरी से जूझने के लिए हमने अपने अफसर नियुक्त कर रखे थे, ये लाशें हमारी नहीं हो सकती। अन्ततः दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने इस वर्ष पहले मित्रता स्थापित करने का प्रस्ताव रखा और बाद में लाशों पर निर्णय लेने की बात कही।

विशेषः

1. दोनों ही देशों की सरकारें नंगी आवारा लाशों को अपनाने से इसलिए इन्कार कर रही हैं कि कहीं उनकी पोल न खुल जाए। उनका दावा है कि उनके अधिकारी अपने नागरिकों की देखरेख भली भाँति कर रहे हैं।
2. दोनों देशों के प्रधानमंत्री एक – दूसरे देश के लिए अपनी सीमा खोलने का निर्णय इसलिए लेते हैं ताकि उनके नेता एवं अफसर आसानी से तस्करी एवं गुप्तचरी के लिए एक दूसरे के यहां आ–जा सकें।
3. शब्द – चयन सटीक एवं भावानुकूल है।
4. भाषा सरल, सहज एवं सुग्राह्य है।

परराष्ट्र मंत्रियों ने दो नियम बताये

दो पारपत्र उसको जो उड़कर आए

दो पारपत्र उसको जो उड़कर जाए

पैदल को हम केवल तब इज्जत देंगे

जब देकर के बंदूक उसे भजेंगे

या घायल से घायल अदले बदलेंगे।

पर कोई भूखा पैदल मत आने दो

मिट्टी से मिट्टी को मत मिल जाने दो

वरना दो सरकारों को जाने क्या हो

सन्दर्भः प्रस्तुत पद्यांश रघुवीर सहाय द्वारा रचित 'पैदल आदमी' नामक कविता से अवतरित है। यह कविता मूलतः कवि के काव्य–संग्रह 'हंसो – हंसो जल्दी हंसों' में संकलित है।

प्रसंगः युद्धोपरान्त दोनों देशों में संधि हुई तो उनके विदेश मंत्रियों ने नियम बनाए कि एक – दूसरे देश के वे लोग ही परस्पर एक – दूसरे देश में आ – जा सकेंगे जो हवाई जहाजों से यात्रा करेंगे, उन्हें ही अनुमति पत्र या वीजा दिया जा सकेगा। पैदल केवल वे लोग ही दूसरे देश में प्रवेश पा सकेंगे, जिनके हाथों में बन्दूकें होगी और वे दूसरे देश में आतंक फैलाने में सक्षम होंगे। एक – दूसरे देश के घायलों की भी अदला – बदली हो सकेगी। परन्तु किसी भूखे पैदल आमदी को किसी भी देश में प्रविष्ट नहीं होने दिया जाएगा, क्योंकि ऐसा आदमी मिट्टी के समान होता है और मिट्टी की पहले ही किसी देश में कोई कमी नहीं है। ऐसे मुफलिस लोगों को देश में आने की इज़ाजत देने से देश की बदनामी होगी। मिट्टी को मिट्टी में मिलाने से भला क्या फायदा?

विशेषः 1. दोनों देश मित्रता के नाम पर अपनी स्वार्थ–सिद्धि एवं जासूसी करना चाहते हैं।

2. कोई भी देश अपनी बदनामी नहीं करना चाहता। यदि कोई भूखा – नंगा पैदल आदमी एक देश से दूसरे देश में जाएगा तो इससे दोनों ही देशों की बदनामी होगी।

3. सटीक – शब्द चयन भावाभिव्यक्ति में कारगर सिद्ध हुआ है।

4. भाषा सरल, सहज एवं भावानुकूल है।

5. अनुप्रास एवं विशेषण विपर्यय अलंकारों का सुष्ठु प्रयोग हुआ है।

4.3.6. पानी–पानी, बच्चा–बच्चा

पानी पानी

बच्चा बच्चा

हिन्दुस्तानी

माँग रहा है

पानी पानी

जिसको पानी नहीं मिला है

वह धरती आज़ाद नहीं

उस पर हिन्दुस्तानी बसते हैं

पर वह आबाद नहीं

पानी पानी

बच्चा बच्चा

माँग रहा है

हिन्दुस्तानी।

सन्दर्भ : प्रस्तुत पद्यांश रघुबीर सहाय द्वारा रचित 'पानी – पानी, बच्चा – बच्चा' कविता से अवतरित किया गया है। मूलतः यह कविता उनके काव्य–संग्रह 'हंसो हंसो जल्दी हंसो' में संकलित है।

प्रसंगः वस्तुतः यहां 'पानी' सम्पदा या धन – दौलत का प्रतीक है। कवि की मान्यता है कि भारत स्वतंत्र होकर भी आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं हो पाया। इसलिए यहां का बच्चा – बच्चा पानी की मांग कर रहा है।

व्याख्या : भारत का बच्चा – बच्चा अर्थात् प्रत्येक नागरिक धन की मांग कर रहा है। जिस देश के लोगों के पास पानी (धन) नहीं है, वह देश स्वतंत्र नहीं है। निर्धन धरा पर भारतवासी रहते तो हैं, पर वे खुशहाल नहीं हैं। भूखे पेट कुछ भी तो अच्छा नहीं लगता। खोखली आजादी को ओढ़ें या बिछाएं, वह किसी काम की नहीं। अर्थात् भारत के लोग भूखे मरने के लिए स्वतंत्र हैं। उन्हें ऐसी आजादी नहीं चाहिए। इसलिए वे संवेत–स्वर में आर्थिक आजादी मांग रहे हैं।

विशेषः–1. 'पानी' अनेकार्थी शब्द है। यहां इस का प्रयोग धन या जीवन के प्रतीक के रूप में हुआ है। पानी संसार की सबसे बहुमूल्य वस्तु है। रहीम ने भी तो पानी के महत्त्व को बताते हुए कहा है–

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे, मोती, मानुष चून।।

2. सटीक शब्द – चयन से भावाभिव्यक्ति सशक्त हुई है।
3. भाषा भावानुकूल एवं प्रभावात्मक है।
4. अनुप्रास एवं वीप्सा अलंकारों का सुष्ठु प्रयोग हुआ है।

जो पानी के मालिक हैं
भारत पर उनका कब्ज़ा है
जहाँ न दें पानी वहाँ सूखा
जहाँ दें वहाँ सब्ज़ा है
अपना पानी
माँग रहा है
हिन्दुस्तानी।

सन्दर्भः– प्रस्तुत पद्यांश रघुवीर सहाय द्वारा रचित 'पानी–पानी, बच्चा–बच्चा' कविता से उद्धृत किया गया है। मूलतः यह कविता उनके काव्य – संग्रह 'हंसो हंसो जल्दी हंसो' में संकलित है।

प्रसंगः कवि की मान्यता है कि स्वतंत्रता – प्राप्ति के बाद भी भारत सही अर्थों में स्वतंत्र नहीं हो पाया, क्योंकि यहां सत्ता – सम्पन्न लोगों ने धन (पानी) पर अपना अधिकार जमा लिया तथा निर्बल एवं निर्धन लोग भूख से बिल–बिलाते रहे और नारकीय जीवन जीने के लिए मजबूर हो गए।

व्याख्याः भारत के आजाद होने पर कुछ लोगों ने यहां की धन – सम्पदा पर अपना अधिकार जमा लिया। वे उस पर कुंडली मार कर बैठ गए। जहां के लोगों को उनके हिस्से का धन नहीं मिला वहां सूखा पड़ गया अर्थात् ऐसे लोगों को खाने के लाले पड़ गए। जहां के लोगों को उनका समुचित हिस्सा मिल गया वे खुशहाल हो गए। जिन लोगों को अब तक उनके अधिकार नहीं मिले अर्थात् उन्हें यथेष्ट धन नहीं मिला, भारत के वे लोग अपना पानी मांग रहे हैं। वस्तुतः पानी जीवन का पर्याय है। खुशहाल जीवन जीने के लिए पानी (धन) की आवश्यकता होती है।

विषेषः
1. कवि ने यहां बताया है कि धनाभाव में ज़िन्दगी का कोई अर्थ नहीं। काग़ज की आज़ादी तो दो – दो आने में बिकती फिरती है। कवि यहां 'धनमेव बलम्' के सिद्धान्त का समर्थन करता हुआ प्रतीत होता है।
2. भाषा सहज, सरल एवं भावानुकूल है।
3. कब्जा से धुन (तुक) मिलाने के लिए 'सब्जा' शब्द की नवीन उद्भावना है, क्योंकि मूल शब्द 'सब्ज' है, जिसका अर्थ हरा एवं हरियाली होता है।
4. सटीक शब्द – चयन से भावाभिव्यक्ति सशक्त हुई है।

बरसों पानी को तरसाया
जीवन से लाचार किया
बरसों जनता की गंगा पर
तुमने अत्याचार किया

हमको अक्षर नहीं दिया है

हमको पानी नहीं दिया

पानी नहीं दिया तो समझो

हमको बानी नहीं दिया

अपना पानी

अपनी बानी हिन्दुस्तानी

बच्चा बच्चा माँग रहा है।

सन्दर्भः प्रस्तुत पद्यांश रघुवीर सहाय द्वारा रचित 'पानी—पानी, बच्चा—बच्चा' नामक कविता से उद्धृत किया गया है। यह कविता मूलतः उनके काव्य—संग्रह 'हंसो हंसो जल्दी हंसो' में संकलित है।

प्रसंगः यहां कवि ने भारतीय लोकतंत्र का खोखलापन दिखाने का प्रयास किया है। लोकतंत्र में सब नागरिकों के समान अधिकार होते हैं। देश की धन — सम्पदा पर भी सब का समान हक होता है, पर भारत में तो लोग अपने धन पाने के अधिकार के लिए तरस रहे हैं। वे इस अधिकार से वंचित है।

व्याख्याः कवि कह रहा है कि भारत को स्वतंत्र हुए बहुत वर्ष हो चुके हैं। लोग सरकार एवं नेताओं के आश्वासनों के निरर्थक हो जाने पर वर्षों से आर्थिक स्वतंत्रता पाने के लिए तरस रहे हैं। वे आर्थिक तंगी का जीवन बिताने के लिए मज़बूर हैं। पूंजीपति एवं सत्ताधारी लोग वर्षों से वंचितों के हकों को दबाए बैठे हैं। उन पर अत्याचार कर रहे हैं। उन्हें न ही तो पढ़ने देते हैं और न ही उनके हक का धन देते हैं। यदि उन्हें उनके हिस्से का धन ही नहीं मिला तो मानो उनकी वाणी ही छीन ली। अपना धन एवं मान — सम्मान पाने के लिए भारत का बच्चा —बच्चा गुहार लगा रहा है।

विशेषः

1. कवि कहना चाहता है कि खुशहाल जिंदगी जीने के लिए धन की जरूरत पड़ती है। सम्मान पाने के लिए आर्थिक स्वतंत्रता अत्यावश्यक है। कहा भी गया हैः—

   यस्यार्थ तस्य मित्राणि, यस्यार्थ तस्य बान्धवाः।

   यस्यार्थ स हि पुंमान लोके, यस्थार्थ स एव पण्डितः।।

2. अनुप्रास एवं वीप्सा अलंकारों का सुष्ठु प्रयोग हुआ है।
3. सटीक शब्द — चयन से प्रतिपाद्य की गरिमा बढ़ी है।
4. भाषा सरल, तरल एवं भवानुकूल है।

धरती के अन्दर का पानी

हमको बाहर लाने दो

अपनी धरती अपना पानी

अपनी रोटी खाने दो

पानी पानी

पानी पानी

बच्चा बच्चा
माँग रहा है
अपनी बानी
पानी पानी
पानी पानी
पानी पानी।

सन्दर्भः प्रस्तुत पद्यांश रघुवीर सहाय द्वारा रचित 'पानी–पानी, बच्चा–बच्चा' कविता से अवतरित है। यह कविता मूलतः उनके काव्य–संग्रह 'हंसो हंसो जल्दी हंसो में संकलित है।

प्रसंगः स्वतंत्रता – प्राप्ति के बाद भारत के आम लोगों को निरन्तर उनके अधिकारों से वंचित रखा जा रहा है। पूंजीपति धनवान एवं मठाधीश उनके हिस्से के धन को दबाए बैठें हैं। उनके हक की धरती को भी उन्होंने कब्जा लिया है। कवि उसी मार्मिक स्थिति का आकलन यहां कर रहा है।

व्याख्याः शोषित समाज के लोग सत्ताधारी लोकतंत्र के ठेकेदारों से मांग कर रहे हैं कि भारत की रत्नगर्भा धरती से उन्हें अपने हिस्से का धन निकालने दो। भारत की धरती पर हर भारतीय का समान अधिकार है। अतः उन्हें अपने हिस्से का धन भूगर्भ से निकालने दो। उन्हें अपनी आजीविका कमाने और अपने हिस्से की भूमि पाने का हक है। इसीलिए भारत का बच्चा–बच्चा अपने हक का धन पाने की पुरजोर मांग कर रहा है। वह धन – धन की रट लगा रहा है।

विशेषः 1. कवि कहना चाहता है कि जिसने भारत में जन्म लिया है, उसका भारतभूमि पर जन्म सिद्ध अधिकार है। यह भूमि किसी की बपौती नहीं है। कुछ लोग इसकी सम्पदा पर कुंडली मारे बैठे हैं।

2. भाषा सरल, सहज एवं भावानुकूल है।
3. सटीक शब्द – चयन से अभिव्यक्ति सशक्त हुई है।
4. अनुप्रास, वीप्सा आदि अलंकारों का सुष्ठु प्रयोग हुआ है।

अपनी प्रगति जांचिए

7. 'पढ़िए गीता' नामक कविता में सीता को किसकी पत्नी बनने को कहा गया है?

(क) किसी व्यापारी की (ख) किसी अध्यापक की
(ग) किसी मूर्ख की (घ) किसी मजदूर की

8. किले में औरतों को क्यों रखा गया था?

(क) वेश्यावृति के लिए (ख) खाना बनाने के लिए
(ग) नृत्य दिखाने के लिए (घ) कपड़े सिलने के लिए

9. 'रामदास' किसका प्रतीक है?

(क) पुलिस अफसर का (ख) आम आदमी का
(ग) चाकूबाज का (घ) पुजारी का

10. 'पैदल आदमी' को कवि ने किसके बराबर बताया है?

(क) मूर्ख के बराबर (ख) बहादुर के बराबर

(ग) धन के बराबर (घ) मिट्टी के बराबर

11. 'पानी–पानी, बच्चा–बच्चा हिन्दुस्तानी मांग रहा है' पंक्ति में कौन सा अंलकार है?

(क) उपमा (ख) उत्प्रेक्षा

(ग) वीप्सा (घ) श्लेष

12. बड़ी होने पर लड़की ससुराल में दुःखी क्यों रहेगी?

(क) वह विधवा हो जाएगी (ख) उसे बच्चा नही होगा

(ग) उसे मूर्ख पति मिलेगा (घ) वह अपनी इच्छानुसार जीवन नहीं जी सकेगी

4.4 स्वातंत्र्योत्तर युग और रघुवीर सहाय की कविता

स्वातंत्र्योत्तर युग

स्वातंत्र्योत्तर युग के हिन्दी काव्य में न तो प्रकृति में कीट–भृंग उड़ते दिखाई पड़ते हैं और न ही कवियों की पलायनवादी प्रवृति। इस काल के कवियों ने कोकिल को भी पावक कण बरसाने की गुहार नहीं लगाई और न ही उन्होंने कवियों को कोई ऐसी तान छेड़ने को कहा जिससे उत्थल–पुथल मच जाए। अर्थात् इस काल की कविता ने छायावाद की कोमल कान्त पदावली की मसृणता और प्रगतिवादी काव्य धारा की क्रांतिकारिता को छोड़कर एक नए परिवेश में प्रवेश किया। जिसे विद्वानों ने भिन्न–भिन्न नामों से अभिहित किया।

आधुनिक हिन्दी–काव्य की इस नवीनतम धारा को प्रतिपादित करते हुए डॉ. शिवदान सिंह चौहान ने कहा कि उत्तर छायावाद युग की दूसरी धारा हिन्दी की वह कविता है जिसमें व्यक्तिवाद की परिणति घोर अहंवादी, स्वार्थ प्रेरित असामाजिक, उच्छृंखल और असन्तुलित मनोवृत्ति के रूप में हुई है। इस कविता का शायद अभी अन्तिम रूप में नाकरण नहीं हो पाया है, इसलिए प्रयोगवादी, प्रतीकवादी, प्रपद्यवादी या नई कविता इन नामों से पुकारा जाता है।

इस कविता में रागात्मक मार्ग से नए अर्थ की सृष्टि करके मानव–भावना का संस्कार और चेतना का विस्तार करने का प्रयास नहीं है, बल्कि मनुष्य के जीवन–बोध को ही खण्डित और विकृत बनाना इसका सहज उद्देश्य प्रतीत होता है। प्रयोगशीलता का आडम्बर तो केवल समाजद्रोही भावनाओं और जीवन के प्रति घोर अनास्था, कुंठा और विद्रूपतात्मक उद्‌गारों को एक दुरूह संकेतात्मक भाषा, अस्वाभिक अलंकार – योजना और अहंवादी और बहुधा ओछे तल की वचन – भंगिमा में छिपाने का उपक्रम मात्र है। निश्चय ही यहां नई कविता के भाव–पक्ष और कला–पक्ष का मार्मिक विश्लेषण एवं विवेचन किया गया है।

इस युग की कविता के सम्बन्ध में प्रसिद्ध कवि एवं धुरन्धर आलोचक तथा प्रयोगवाद के प्रवर्तक अज्ञेय का कहना है कि जो व्यक्ति का अनुभूत है उसे समष्टि तक कैसे सम्पूर्णता में पहुँचाया जाए यही इस युग के कवियों का लक्ष्य है। प्रयोगशील कविता में नए सत्यों या नई यर्थाथताओं का बोध भी है, उन सत्यों के साथ नए रागात्मक सम्बन्ध भी और उनको पाठक या सहृदय तक पहुँचाने की शक्ति है। इसलिए वह कवि व्यक्ति – सत्य को व्यापक सत्य बनाने का सनातन उत्तरदायित्व अब भी निबाहना चाहता है। इस दौर के कवि शैलीगत और विषयगत एकदम विलक्षण नवीन प्रयोगों के उत्कट अभिलाषी हैं।

इस विषय में डॉ. गणतिचन्द्र गुप्त का कथन है कि नई कविता, नए समाज के, नए मानव की नई वृतियों की नई अभिव्यक्ति, नई शब्दावली में, नए पाठकों के नए दिमाग पर, नए ढ़ंग से नया प्रभाव उत्पन्न करती है। गिरिजाकुमार माथुर ने नई कविता की विवेचना करते हुए लिखा है कि मौजूदा कविता के अन्र्तगत वे दोनों प्रकार की कविताएं कही जा रही हैं, जिनमें एक ओर या तो शैली शिल्प और माध्यमों के प्रयोग होते रहे हैं और दूसरी ओर समाजोन्मुखता पर बल दिया जाता रहा है। लेकिन नई कविता हम उसे मानते हैं जिसमें इन दोनों के स्वस्थ तत्त्वों का सन्तुलन और समन्वय है। यह नई कविता नए शिल्प और उपमानों के प्रयोग के साथ समाजोन्मुखता और मानवता को एक साथ अंजलि में भरे भविष्य की ओर अग्रसर हो रही है। उसकी नज़र अतीत की श्यामलता और वर्तमान के संघर्ष से आगे भविष्य पर टिकी है। जीवन की संघर्षजन्य कटुता के बीच भारतीय आदर्शानुसार उसकी आशा की लौ निष्कंप है, क्योंकि उसे विश्वास है कि आज चाहे जो स्थिति हो, मानवता का भविष्य कल्पनामय है और वह हर अमंगल शक्ति पर निश्चित रूप से विजय प्राप्त करेगी। इसीलिए नई कविता पलायन, पस्ती और पराजय की कविता नहीं हो सकती।

रघुवीर सहाय के काव्य की विशेषताएं

रघुवीर सहाय का अधिकांश काव्य साठोत्तरी कविता के अन्तर्गत आता है। अतः उनके काव्य में निर्दिष्ट काल की कविता की सभी विशेषताएं देखी जा सकती हैं। जैसे –

अतीत एवं वर्तमान में अनास्था :

कवि प्रायः अतीत का गौरव–गान करते रहे हैं। वर्तमान में भी उन्हें आशा की किरण दिखाई दी है, किन्तु इस काल–खण्ड के कवि अतीत एवं वर्तमान के प्रति अनासक्त हैं। इस सन्दर्भ में रघुवीर जी की उनसे शुरूआती दौर की एक बहुचर्चित कविता प्रस्तुत की जा रही है, जो यह आह्वान करती है कि यदि कवि बनना है, कविता लिखना है तो परम्परा से आगे निकल कर चलो। कुछ नया सीखो। कुछ नई बात बोलो। एक तरह से देखा जाए तो उनकी यह कविता नई कविता के लिए एक मंत्रवाक्य जैसी थी –

अगर कहीं मैं तोता होता

तोता होता तो क्या होता?

तोता होता

होता तो फिर क्या?

होता, फिर क्या? होता क्या?

मैं तोता होता

यदि रघुवीर सहाय से हम कुछ सीखेंगे तो फिर तोता नहीं बने रहेंगे। तब हम निश्चय ही कुछ नए तरीके से सोचेंगे और कुछ नई बात बोलेंगे। हम अपनी काव्य–धर्मिता से तोतापन को बाहर निकाल फेंकने में सफल हो सकेंगे।

काव्य में जीवन–झांकी :

विभिन्न आलोचकों ने सहाय के काव्य को खण्ड–खण्ड टुकड़ों में निरखे–परखने की कोशिश की। वे आलाचकों की इस प्रवृति से विरूद्ध थे। वे जीवन का सूक्ष्म दर्शन करते हुए उसके सर्वांगीण चित्रण में विश्वास रखते थे। उनके अनुसार कवि का कैनवास व्यापक होता है। उसमें जीवन की विभिन्न अवस्थाएँ, उसके विभिन्न आयाम, उसके विविध, यथार्थ समाए रहते हैं। उन्हें खण्ड – खण्ड में बांट कर नहीं देखा जा सकता। सारे महाकवियों ने जीवन

को इसी व्यापकता के साथ देखा, समझा और वर्णित किया। उन्होंने अपनी कविता 'समाधि लेख' में आलोचकों के एकांगी दृष्टिकोण पर इस प्रकार तीव्र प्रतिक्रिया की है–

नारी चिड़िया देश जागरण
बच्चा प्रकृति दुःख वासना
अलग–अलग डिब्बों में मेरी
पीड़ाएँ मत बन्द कीजिए
जिन्हें एक में मिला–जुलाकर
मैंने की थीं ये रचनाएँ
यह कहने आ नहीं सकेंगे
चले गए हैं स्वर्ग महाकवि।

भावी घटनाओं का पूर्वाभास :

रघुबीर सहाय की कविता में कई व्यक्ति आते हैं। 'आने वाला खतरा' नामक कविता में किसी रमेश से संबोधित होकर चेतावनी के कुछ वाक्य बोलते हैं, जो बाद में जल्द ही चलकर आपातकाल के रूप में साकार हो जाते हैं –

एक दिन इसी तरह आएगा – रमेश
कि किसी की कोई राय न रह जाएगी – रमेश
क्रोध होगा पर विरोध न होगा
अर्जियों के सिवाय – रमेश
ख़तरा होगा ख़तरे की घंटी होगी
और उसे बादशाह बजाएगा – रमेश

रघुबीर सहाय की कविता अकसर अपने बेहद कारगर अभिप्रायों में संज्ञा को सर्वनाम बना देती है, रमेश भी इसी प्रसंग का हिस्सा है। शेष बड़ी स्पष्ट बात है कि इस कविता में खतरे की घंटी वास्तविकता में बजाई गई और उसे मालिक ने बजाया। हमारे समय में भी घंटियां बज रही हैं, शासक वर्ग खुलेआम उन्हें बधावे की भांति बजा रहा है और हमारी 'रमेश' पीढ़ी मुदित मन सुन रही है। उनकी कविता 'रामदास' उनकी भविष्यवाणी का ज्वलन्त प्रमाण है।

रघुवीर सहाय की बीसियों कविताएँ ऐसी हैं, जिनमें मनुष्य पर आने वाले संकटों के विषय में एक प्रोफेटिक विजन मिलता है। ऐसी चेतावनियाँ नजर आती हैं, जैसी उनके पूर्ववर्ती कवि मुक्तिबोध की कविताओं में भी जगह–जगह मिलती हैं।

उनकी कविताएँ प्रायः भविष्य की खबरें लेकर आती – सी प्रतीत होती हैं। वे भारतीय लोकतंत्र की दुर्गति के प्रति भी सजग थे। जैसा कि एक सच्चे पत्रकार में होता है, देश – काल की चिन्ता उनकी कविताओं का केन्द्र बिन्दु रही है। वे समय से आगे निकलकर विषयों की पड़ताल करते हुए उनमें समकालीन परिस्थितियों के प्रति ही नहीं, भविष्य की कठिनाइयों के बारे में भी पूर्वाभास कराते चलते थे। 'लिखने का कारण' नामक लेख में उन्होंने स्वयं लिखा है कि पत्रकार के लिए यथार्थ वही है जो संभव हो चुका है। साहित्यकार के लिए वह है जो संभव हो सकता है।

वे एक भविष्यद्रष्टा कवि थे और अपनी 'आत्महत्या के विरूद्ध' नामक कविता में उन्होंने स्वयं इस बात की पुष्टि करते हुए लिखा है–

समय आ गया है जब तब कहता है संपादकीय

हर बार दस बरस पहले कह चुका होता हूँ

कि समय आ गया है।

खोखले लोकतंत्र का उपहास :

भारतीय समाज में राजनीति का बहुआयामी महत्त्व है। समाज और साहित्य का विकास भी समकालीन राजनीतिक परिस्थितियों से होता रहा है। यथार्थ यह है कि तात्कालिक राजनीतिक परिस्थितियां साहित्य को काफी प्रभावित करती हैं। रघुवीर सहाय राजनीतिज्ञ नहीं थे और न ही किसी विचारधारा, सिद्धान्त, वाद या दल विशेष से जुड़े हुए थे, फिर भी समकालीन राजनीति से मुक्त नहीं थे। उन्होंने समकालीन राजनीतिक परिवेश की विसंगतियों, विद्रूपताओं को आक्रोश के साथ– साथ व्यंग्यात्मक रूप में अभिव्यक्ति दी। उन्होंने अपने काव्य में नेताओं की मानसिकता एवं राष्ट्र के सही हालातों का वर्णन किया। अधिकांश सत्ताधारी लोग स्वार्थ–सिद्धि में लगे हुए हैं। जनता को क्षेत्रवाद जातिवाद, सम्प्रदायवाद आदि के पंचड़े में फंसाकर खुद कुर्सी को पाने, हथियाने और बचाने में लगे हुए थे। ये वृद्ध होने पर भी बच्चों की तरह कुर्सी के लिए लड़ते–झगड़ते हैं। ऐसे में कवि संसद सदस्यों के चरित्र की नुमाइश लगाता हुआ कहता है–

सिंहासन ऊँचा है, सभाध्यक्ष छोटा है

अगणित पिताओं के

एक परिवार के

मुँह बाए बैठे हैं, लड़के सरकार के

लूले, काने, बहरे विविध प्रकार के

हल्की सी दुर्गन्ध से भर गया है सभाकक्ष।

व्यंग्यात्मकताः

अपने काव्य में प्राण फूंकने के लिए कवि कभी से व्यंग्य का प्रयोग करते आ रहे हैं। 'नई कविता' के युग में व्यंग्य ने ब्रह्मास्त्र का रूप धारण कर लिया। सामाजिक विद्रूपता एवं राजनीतिक भ्रष्टाचार का भांडा फोड़ने के लिए यह अधिक कारगर नजर आया। रघुवीर सहाय ने अपने समकालीन कवियों के साथ ताल मिलते हुए अपने काव्य में खूब व्यंग्य–बाण बरसाए। लोकसभा के सांसदों पर भी उन्होंने अपनी इस शक्ति को आजमाया। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में सांसदों का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। इनकी कथनी और करनी में अन्तर पर व्यंग्य करते हुए उन्होंने लिखा है–

का नाम सुन देशप्रेम के मारे

मेजें बजाते हैं

सभासद भद–भद भद कोई नहीं हो सकती राष्ट्र की

संसद एक मन्दिर है, जहां किसी को द्रोही कहा

नहीं जा सकता

दूध पिए, मुँह पोछे पा बैठे जीवनदानी गोंद

दानी सदस्य तोंद सम्मुख धर

बोले कविता में देश प्रेम लाना हरियाणा प्रेम लाना

आइस–क्रीम लाना है।

मूल्यहीनता पर प्रहार :

एक पत्रकार होने के नाते रघुवीर सहाय ने अपनी खुली आँखों से भारतीय संस्कृति की धज्जियाँ उड़ती देखी। हमारी संस्कृति के आधारभूत तत्त्वों को ताक पर रखकर, लोगों को अपनी स्वार्थसिद्धि करते हुए देखा। उन्हें लगा कि सारा समाज मूल्यहीनता का शिकार होता जा रहा है। देश में दिनोंदिन अपराध कैंसर की तरह फैलता जा रहा है। इस स्थिति को उन्होंने इस प्रकार उद्घाटित किया :

"मारो मारो शोर था मारो

एक ओर साहेब था

सेठ था, सिपाही था

एक ओर मैं था

मेरा पुत्र और भाई था

मेरे पास आकर खड़ा हुआ एक राही था।"

राजनीतिक विद्रूपता का चित्रणः–

स्वतंत्रता–प्राप्ति के पश्चात् भारत में अलगाव की त्रासदी व जातीय संघर्ष की घटनाएं निरन्तर बढ़ती ही गई। सम्प्रति राष्ट्रीय एकता, 'सांस्कृतिक राष्ट्रीयता' जैसे मूल्य केवल ऊपरी सतह पर चर्चाओं में रह गए। सत्ता–सुख और वोट बटोरने के लिए कुत्सित राजनीतिज्ञों ने उन्हें बढ़ावा दिया है। लगभग प्रत्येक राजनीतिक पार्टी इन्हें अपने वर्चस्व के लिए प्रयुक्त करती रही है। आज उसी का ही एक उग्र और आक्रामक उभार 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' के नाम पर निकृष्ट चरित्र दिखाई पड़ रहा है। इस दृष्टि से रघुवीर सहाय जैसे महान कवि ने हिंदी – जगत् के बहुत बड़े क्षेत्र को भारतीय सांस्कृतिक–राजनीतिक दुष्परिणामों से अवगत करवाया है। आज हमारे समाज में ऐसे बुद्धिजीवी बहुत कम हैं, जो उनकी तरह आज के राजनीतिक दलों की चालबाजियों और कारगुजारियों की पोल खोल सकें।

जवाहर लाल नेहरू ने शान्ति और प्रेम का विश्वव्यापी अभियान चलाया और देश में उनकी नाक के नीचे चल रही कारगुजारियों को अनदेखा करने की ऐतिहासिक भूल कर गए और बात यहां तक जा पहुँची–

दस मंत्री बेईमान और कोई अपराध सिद्ध नहीं

काल रोग का फल है अकाल अनावृष्टि का

यह भारत एक महागद्दा है प्रेम का

ओढ़ने–बिछाने का धारण कर

धोती महीन सदानन्द पसरा हुआ।

लाचार लोगों की व्यथा का वर्णन

जनमानस में वही कवि दीर्घजीवी होता है, जिसकी कविता संकट में काम आए और संकट से निजात पाने का उपाय सुझाए। रघुवीर सहाय ऐसे ही कवि हैं, उनकी कविता स्वाधीन भारत के निम्नमध्यवर्गीय आम आदमी की व्यथा को प्रमाणिक मार्मिकता से व्यक्त करती है। उनकी कविता में शासन की क्रूरता और कपट का कच्चा चिट्ठा खोला गया है–

यह क्या है जो इस जूते में गड़ता है

यह कील कहां से रोज निकल आती है

इस दुःख को रोज समझना पड़ता है।

जनता की समस्याओं का निराकरण किए बिना कोई भी लोकतंत्र वास्तविक लोकतंत्र नहीं बन सकता और यह विडम्बना है कि भूखी और लाचार जनता का करूण–क्रन्दन सुनने वाले कानों की कमी होती जा रही है। रघुवीर सहाय ने ऐसे असहाय आम लोगों की यथार्थ स्थिति का चित्रण जो चाहकर भी सत्ता के विरूद्ध नहीं बोल सकते अपनी कविता 'सभी लुजलुजे हैं' में इस प्रकार किया हैः

खौंखियाते हैं, किंकिंयाते हैं, घुन्नाते हैं

चुल्लू में उल्लू हो जाते हैं

मिनमिनाते हैं, कुड़कुड़ाते हैं

झाँय झाँय करते हैं, रिरियाते हैं

सभी लुजलुजे हैं, थुल थुल हैं

लिब लिब हैं, पिल पिल हैं

सब में पोल है, सब में झोल है......

सामन्तवादी–व्यवस्था का विरोधः

स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद भी भारतीय समाज की हालत लचर – पचर ही रही। आशा थी कि चिरशोषित निम्न वर्ग का उद्धार होगा, उसे कुछ अधिकार मिलेंगे। परन्तु अफसोस है कि सर्वहारा मजदूर, किसान की हालत जस की तस रही। उस पर सामन्ती सता का शिकंजा और कड़ा हो गया। रघुवीर सहाय ने अमीर – गरीब के बीच बढ़ती खाई को पहचाना और अधिकनायकवादी शक्तियों पर अपनी कविता 'आत्महत्या के विरूद्ध' में करारा व्यंग्य किया–

राष्ट्रगीत में भला कौन वह

भारत भाग्य विधाता है

फटा सुथन्ना पहने जिसका

गुन हरचरना गाता है

कौन–कौन है वह जनगण मन

अधिनायक वह महाबली

डरा हुआ मन बेमन जिसका

बाजा रोज बजाता है।

उपर्युक्त पद्यांश में स्पष्ट कर दिया गया है कि सामन्तशाही के चंगुल में फंसा आम आदमी उसका गुणगान करने के लिए मजबूर है और राष्ट्रवाद का आसव पिलाकर अधिनायकवादी ताकतें जनसामान्य का शोषण कर रही हैं।

आशावादी दृष्टिकोणः

रघुवीर सहाय कहा करते थे कि कविता को केवल निराशा या नकारात्मकता से सनित नहीं होना चाहिए। आशा, जिजीविषा, मनुजत्व की जीत एवं शुभाशंसा से भी कविता को संवलित होना चाहिए। उनकी कविता 'खोज' की ये पंक्तियां इस तथ्य को प्रमाणित करती हैं–

> यह तुमने क्या लिखा–
>
> झुरियाँ, उनके भीतर छिपे
>
> उनके प्रकट होने के आसार
>
> आँखों में उदासी–सी एक चीज दिखती है–
>
> यह तुमने मरने से पहले का वृत्तान्त क्यों लिखा?

जन–चेतना :

अपने साथी कलाकारों और साहित्यकारों से रघुवीर सहाय ने ऐसे मूल्यों की स्थापना करने की दिशा में जन–चेतना को जागृत करने को कहा, जो समाज के लिए कल्याणकारी हों। इस बात को लेकर वे चिंता प्रकट करते हैं कि जिन रचनाकारों का कार्य समाज को सही दिशा दिखाना होता है, उसका मार्ग प्रशस्त करना होता है, वे साहित्यकार गरीबी और गुलामी के बारे में चुप्पी क्यों साधे हुए हैं?

> क्यों कलाकार को नहीं दिखाई देती
>
> गंदगी गरीबी और गुलामी से पैदा?
>
> आतंक कहां जा छिपा भाग कर जीवन से
>
> जो कविता की पीड़ा में अब दिख नहीं रहा?
>
> हत्यारों के क्या लेखक साझीदार हुए
>
> जो कविता हम सबको लाचार बनाती है?

रघुवीर सहाय कहना चाहते हैं कि गरीबों की दीन – दशा पर घड़ियाली आँसू बहाने से कुछ हासिल नहीं होगा। 'सच क्या है' नामक अपनी कविता में उन्होंने लिखा है–

> इस झूठे करुणामय मन को धिक्कार है
>
> वह दुःख ही सच्चा है जो हमने झेला है।

नारी–विमर्श :

अपने एक लेख में उन्होंने अपना नारी विषयक दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए लिखा है कि हिन्दी साहित्य में स्त्री के प्रति यह भावना बार – बार व्यक्त हुई है कि वह उपेक्षिता है, इसलिए दया की पात्रा है। आधुनिक कहे जाने वाले साहित्य में पुरूष से उसके शरीर सम्बन्ध को विशेष महत्त्व दिया गया है, पर वहां भी उसके प्रति दया का भाव लेखक के मन से गया नहीं है...... मानो आधुनिक जीवन के नर–नारी समता के विचार ने रचनाकार को छुआ ही न हो और वह पिछले जमाने के सामन्ती मन से ही स्त्री को देख रहा है।

आए दिन सामने आने वाली घटनाएँ स्त्रियों के सन्दर्भ में गरिमा और समानता जैसे मूल्यों को अंगूठा दिखाती नजर आती हैं। जहां महिलाओं की गरिमा की बात बड़े – बड़े मंचों पर की जाती है, वहीं वह भूखे भेड़ियों का शिकार हो जाती है। विरोधों और उठापटक के बाद मामला ठंडा पड़ जाता है। रघुवीर सहाय ने 'नारी' नामक अपनी कविता में स्त्रियों की स्थिति को कुछ यों दर्शाया है–

नारी बेचारी है

पुरुष की मारी है

तन से क्षुधित है

लपक कर झपक कर

अन्त में चित्त है।

रघुवीर सहाय के काव्य में नारी–विमर्श को पद–पद पर दर्शाया गया है। बेटी, बहू, पतिव्रता, रखैल, पतुरिया, वेश्या आदि नारी के कितने ही रूप उनके काव्य में देखे जा सकते हैं। उन्होंने नारी के समग्र जीवन का एक चलचित्र इस प्रकार संजोया है–

कई कोठरियां थी कतार में

उनमें से किसी में एक औरत ले जाई गई

थोड़ी देर बाद उसका रोना सुनाई दिया

उसी रोने से हमें जाननी थी एक पूरी कथा

उसके बचपन से जवानी तक।

औरत की जिंदगी, बड़ी हो रही है लड़की, नारी, किले में औरत आदि उनकी कितनी ही कविताएँ नारी–विमर्श का जीवन्त दस्तावेज कही जा सकती हैं। कहने को तो नारी पुरुष की अर्द्धांगिनी है, उसके समकक्ष है किन्तु हकीकत को जमाना जानता है।

अकेलेपन का संत्रास :

स्वतांत्र्योत्तर काल के कवि अकेलेपन के संत्रास को भोगते हुए परिलक्षित होते हैं। उनका अहम् उन्हें जनसामान्य में घुलने – मिलने नहीं देता। यह मानव–जीवन की बहुत बड़ी त्रासदी है कि भीड़ में भी वह अपने आपको अकेला महसूस करता है। मनुष्य की इस भयावह स्थिति को रघुवीर सहाय ने अपनी कविता 'मेरा एक जीवन है' में इस प्रकार उकेरा है–

पर मेरा एक और जीवन है

जिसमें मैं अकेला हूँ

जिस नगर के गलियारों, फुटपाथों, मैदानों में घूमा हूँ

हंसा खेला हूँ,

इसके अनेक हैं नगर सेठ, म्युनिसिपल कमिश्नर,

नेता और सैलानी, शतरंजबाज और आवारे

पर मैं इस हा हा हूती में अकेला हूँ।

प्रकृति–चित्रण

प्रकृति और मानव का सनातन सम्बन्ध है। मानव प्रकृति की गोद में जन्मा है, पला है। उससे मानव का चिर परिचय है। प्रकृति अनन्त सौन्दर्य की रंग– स्थली है। प्रकृति के ना – ना रूप मनुष्य को कभी से आकर्षित करते रहे हैं। रघुवीर सहाय के काव्य में प्रकृति के विविध रूप चित्रित हुए हैं। उनकी कविता 'बौर' से प्रकृति की एक झलक प्रस्तुत है–

नीम में बौर आया

इसकी एक सहज गंध होती है

मन को खोल देती है गंध वह

जब गति मन्द होती है

प्राणों ने एक सुख का परिचय पाया

– रघुवीर सहाय (बौर)

उनके 'सीढ़ियों पर धूप में' काव्य–संग्रह में प्रकृति–सम्बन्धी अनेक कविताएं संगृहीत हैं, जिनमें प्रकृति, धूप, पेड़, खुशबू, फूल, बसन्त, गौरैया आदि का मनमोहक वर्णन है। वर्षा का एक दृश्य देखिए –

फिर मिट्टी में जीवन की आशा जागी है

गलते हैं दकियानुसी मिट्टी के ढेले

पिछली फसलों की गिरी पड़ रही हैं मेडें,

सारे अनबोये खेतों की उजली धरती

अब एक हुई, स्वीकार कर रही है नव जल

गुरु आज्ञा–सा।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उनकी कविताएं नए मानव सम्बन्धों की खोज करना चाहती हैं, जिसमें गैर–बराबरी, अन्याय, और गुलामी न हो। उनकी समूची काव्य – यात्रा का केन्द्रीय लक्ष्य ऐसी जनतांत्रिक व्यवस्था की निर्मिति है, जिसमें शोषण, अन्याय, हत्या, आत्महत्या, विषमता, दासता, राजनीतिक संप्रभुता, जाति – धर्म में बंटे समाज के लिए कोई जगह न हो। जिन आशाओं के सपनों से आज़ादी की लड़ाई लड़ी गई थी, उन्हें साकार करने में जो बाधाएँ आ रही हों, उनका निरन्तर विरोध करना उनका रचनात्मक लक्ष्य रहा है।

4.5 रघुवीर सहाय का राजनीतिक परिप्रेक्ष्य

राजनीतिक चेतना :

आजादी के बाद रचित रघुवीर सहाय की कविताएँ भारतीय लोकतंत्र से जुड़े आम आदमी की आशाओं, आकाक्षाओं और सपनों से बुनी गई हैं। आजादी के बाद लगभग दो दशक मोह और आशावाद में डूबे दिखाई देते हैं। भारत का बुद्धिजीवी वर्ग इसी आशावादिता के कारण एक नए भारत, एक नए समाज और एक नई राजनीति का स्वप्न संजोए था। परन्तु उसका यह स्वप्न साकार नहीं हो सका, उसकी आशाएं बाँझ ही रह गई। शेखचिल्ली की भाँति उसके हाथ खाली ही रहे। इस स्थिति को रघुवीर सहाय ने अपनी कविता 'एक अधेड़ भारतीय आत्मा' में इस प्रकार उजागर किया है–

बीस बरस बीत गए

लालसा मनुष्य की तिलतिल कर मिट गई।

इस स्थिति का जिम्मेदार वह तंत्र एवं नेतृत्व था, जिसने आजादी के बाद सामाजिक आधारों को बदले बिना 'लोकतंत्र' की कल्पना की थी। इस लोकतंत्र की दुहाई देकर, उसने जनता की खुशहाली का वायदा किया था, उसे सब्ज बाग दिखलाए थे। लोगों की आशाओं की मीनारें बुलन्द की थी। परन्तु समय बीतने के साथ ही इस तंत्र के लोकतांत्रिक दावों की कलई खुलती गई और इन दावों का असत्य सर्वत्र प्रकट होता गया–

'दूर ....

राजधानी से कोई कस्बा दोपहर बाद छटपटाता है

एक फटा कोट, एक हिलती चौकी, एक लालटेन

दोनों, बाप मिस्तरी और बीस बरस का नरेन

दोनों पहले से जानते हैं पेंच की मरी हुई चूड़ियां

नेहरू युग के औज़ारों को मुसद्दीलाल की सबसे बड़ी देन।

भ्रष्टाचार का बोलबाला :

आजादी के बाद सामाजिक समता, आर्थिक खुशहाली और राजनीतिक खुशनसीबी की जगह भ्रष्टाचार की घोर निराशा ने समकालीन मनुष्य की संवदेना को झकझोर दिया। आम आदमी को लोकतंत्र की मार झेलनी पड़ी। रघुवीर सहाय ने अपनी कविता 'लोकतंत्रीय मृत्यु' में भारतीय लोकतंत्र की दुर्व्यवस्था को इस प्रकार उद्घाटित किया है–

के भीतर एक थुलथुल राजनीतिक देह में

जो भी गतिशील है, अपनी ओर से जीने के

लिए लड़ता है।

अपराधी–से आते हैं राज्यपाल मुख्यमंत्री विधायक

बख्शे हुए से जाते हैं।

तथाकथित राजनेता कभी से भोली–भाली जनता को उल्लू बनाकर अपना उल्लू सीधा करते आए हैं। उनकी छलपूर्ण दूषित नीतियों ने जनता को खूब धता बताया है। चुनाव के समय ये नेता अपनी चिकनी चुपड़ी बातों में निरीह लोगों को फंसा लेते हैं। उनको बड़े रंगीन स्वप्न दिखाते हैं। ऐसा दिखावा करते हैं मानो वे उनके लिए स्वर्ग की वसुन्धरा ला देंगे। किन्तु चुनाव जीतने के बाद वे उन्हें अपने पास फटकने तक नहीं देते। ऐसे नेताओं के खोखले आश्वासनों पर व्यंग्य करते हुए रघुवीर सहाय ने अपनी कविता 'राष्ट्रीय प्रतिज्ञा' में लिखा है–

हमने बहुत किया है

हम फिर से बहुत करेंगे

हमने बहुत किया है

पर अब हम नहीं कहेंगे

कि क्या और करेंगे

और हमसे लोग अगर कहेंगे कुछ करने को

तो वह तो कभी नहीं करेंगे।

राजनीतिक पतनः

वर्तमान राजनीति दलबन्दी की दलदल में घंसी हुई है। आया राम और गया राम इस के प्रणेता हैं। 'गिरगिट – धर्मी' नेता अपनी कुर्सी बचाए रखने के लिए किसी भी हद तक गिर सकते हैं, बिक सकते हैं, दल बदल सकते हैं। उनका एक मात्र उद्देश्य है– सत्ता सुख का उपभोग। रघुवीर सहाय की मान्यता है कि ऐसे आदर्शहीन दलबदलू नेता स्थाई शासन – व्यवस्था कभी नहीं दे सकते, क्योंकि उनका चरित्र छिछला और विचार अस्थिर होते हैं। ऐसे नेताओं की छत्रछाया में भ्रष्टाचार पनपता है, लोग छले जाते हैं। चापलूस लोग ऐसी स्थिति का लाभ उठाते हैं। ऐसी विकृत राजनीति का भाण्डा फोड़ते हुए रघुबीर सहाय ने लिखा है–

दल का दल

पाप छिपा रखने के लिए एक जुट होगा

जितना बड़ा दल होगा उतना ही

खाएगा देश को।

देश को खाने जैसे शब्दों में कवि का आक्रोश है। रघुवीर सहाय राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार की जड़ों तक जाते हैं और इससे पीड़ित आम लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं। उनकी कविता 'अपकी हंसी' में वस्तुस्थिति का यथार्थ चित्रण इस प्रकार हुआ है–

निर्धन जनता का शोषण है

कहकर आप हंसे

लोकतंत्र का अन्तिम क्षण है

कहकर आप हंसे

सब के सब हैं भ्रष्टाचारी

कहकर आप हंसे, चारों और बड़ी लाचारी

कहकर आप हंसे

कितने आप सुरक्षित होंगे

मैं सोचने लगा

सहसा मुझे अकेला पाकर आप हंसे

कवि भ्रष्ट एवं सत्ता–लोलुप नेताओं से जुड़े विभिन्न कांडों का रहस्योद्घाटन करते हुए देश की जनता को ऐसे बसन्त पूजकों से सावधान करता है। अत्याचार सहकर मेषमाता की तरह चुप्पी साधने पर कवि भीरू जनता पर कटाक्ष करता है। अन्याय के विरूद्ध कवि की क्रुद्ध वाणी फूट पड़ती है। उसे चिंता है कि हम इसी प्रकार जुल्म सहते रहे तो एक दिन फिर से गुलाम बन जाएंगे –

आज यही कफन ढके चहरे हैं एक साथ रहने के

बचे खुचे कुछ प्रमाण और इन्हें जो याद रख

नहीं सकते हैं

वे ही समाज पर राज कर रहे हैं

चेहरे के बिना लोग

कल किसी और बड़े देश के गुलाम हो जाएंगे।

वोटबटोरू हथकंडे

राजनीति का फलक बहुत व्यापक होता है। देश की सभी गतिविधियाँ इस से प्रभावित होती हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, साहित्य, समाज, भाषा आदि इससे अछूते नहीं रह सकते। क्षेत्रवाद एवं जातिवाद जैसी विद्वेषपूर्ण समस्याएं भी राजनीति के कुचक्र का ही दुष्परिणाम हैं। वोटरों को बरगलाने एवं रिझाने के लिए आँचलिक नेता भाषाई पाशा भी फेंकते हैं। रघुवरी सहाय की मान्यता है कि हिन्दी इसी क्षेत्र वाद के कारण आज तक राष्ट्रभाषा नहीं बन पाई। यह किसी विधुर की दूसरी पत्नी की भाँति अपना काल यापन कर रही है –

हमारी हिन्दी एक दुहाजू की नई बीवी है

बहुत बोलने वाली, बहुत खाने वाली, बहुत सोने वाली

गहने गढ़ाते जाओ

सर पर चढ़ाते जाओ

यह मुटाती जाए

पसीने से गंधाती जाए घर का माल मैके पहुँचाती जाए।

अन्तरराष्ट्रीय राजनीति

रघुवीर सहाय का काव्य केवल भारतीय राजनीति तक ही सीमित नहीं है। आज विश्व बहुत सिकुड़ गया है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से उत्प्रेरित होकर कवि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का चित्रण करने से भी नहीं चूकता। उनकी 'पैदल आदमी' एवं 'बड़े देशों की राजनीति' जैसी कविताएँ हमारे कथन की साक्षी हैं। 'पैदल आदमी' कविता में उन्होंने भारत–पाक की युद्धोपरान्त उपजी राजनीति को चित्रित किया है, जबकि 'बड़े देशों की राजनीति' नामक कविता में उन्होंने स्पष्ट किया है कि राष्ट्रीय गौरव अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य में ही उद्भासित होता है–

राष्ट्रीय गौरव रह गया है अंतरराष्ट्रीय राजनीति में

मोहरा बनकर

पड़ोसी को हराने में, यह गर्व मिटता है

यदि पड़ोसी और हमारी जनता की दोस्ती बढ़ती है

बड़े देशों की राजनीति करने के लिए अपनी जनता को

तनाव में रखना पड़ता है।

मूल्यांकन :

निर्दिष्ट विवेचन से स्पष्ट है कि रघुवीर सहाय के काव्य में राजनीति के विविध आयाम उद्घाटित हुए हैं। राजनीति में अवसरवादिता, गुटबन्दी, दलबन्दी, दलबदलू प्रवृत्ति, नेताओं की पदलोलुपता, राजनीतिक मूल्यों का पतन, राजनीति और पूंजीवाद में गठबन्धन, चँहुदिश व्याप्त भ्रष्टाचार का प्रकटयन उनके काव्य में पदे–पदे हुआ है।

देश की विशाल जनता पर सत्तालिप्सु मुट्ठी भर लोगों द्वारा किए गए अत्याचारों का बेबाक चित्रण रघुवीर सहाय ने अपनी अनेक कविताओं में किया है। नेताओं की विकृत मानसिकता और उनके ओच्छे हथकंडे उनकी कविताओं में बड़े प्रभावात्मक रूप में चित्रित हुए हैं। उनकी कविता राजनीतिक व्यवस्था के कुचक्र को उजागर करने में कारगर सिद्ध हुई है। वे अपने देश में एक स्वस्थ लोकतांत्रिक व्यवस्था देखना चाहते थे। अपने गन्तव्य की सिद्धि के लिए उन्होंने अपने काव्य को माध्यम बनाया और नेताओं के निंदनीय आचरण का पर्दा फाश करके जनमानस में राजनीतिक चेतना का उद्रेक किया।

4.6 रघुवीर सहाय की कविताओं में सामाजिक यथार्थ

सामाजिक यथार्थ

रघुवीर सहाय की कवितओं में सामाजिक यथार्थ के विषय में कुछ कहने से पहले तत्संबंधी उनके विचारों को जान लेना समीचीन प्रतीत होता है। सामाजिक यथार्थ के सम्बन्ध में अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए अपने एक वक्तव्य में उन्होंने कहा है कि कोशिश तो यही रही है कि सामाजिक यथार्थ के प्रति अधिक जागरूक रहा जाए और वैज्ञानिक तरीके से समाज को समझा जाए। भाषा को भी अधिक साधारण बोलचाल की भाषा के निकट लाने की कोशिश रही है। बहरहाल इस तरह की कोशिशें विचार–वस्तु के दिल और दिमाग में उतरने के तरीके पर निर्भर करेंगी। विचार–वस्तु का कविता में खून की तरह दौड़ते रहना कविता को जीवन और शक्ति देना है और बेहद संवेदनशील कवि वे हैं जो अपने समय और समाज की वास्तविकताओं को पूरी तल्लीनता के साथ प्रकट करते हैं। 'यथार्थ' से अभिप्राय है जीवन की सच्चाइयों का गहरा साक्षात्कार। व्यक्ति एवं परिवेश के सम्बन्धों की गरमाहट तथा ठंडेपन की यथातथ्य प्रस्तुति।

पोलखोल अभियान

रघुवीर सहाय का काव्य सामाजिक यथार्थ का जीवन्त दस्तावेज है। आल्हा छन्द में लिखी गई उनकी अग्रदत पंक्तियाँ जनता और जनार्दन, शोषक और शोषित, मंत्री और आम आदमी के बीच की दूरी को हस्तामलकवत् प्रस्तुत करती हैं–

> इतने बड़े–बड़े कमरे थे जिनमें सौ–सौ लोग समायँ
>
> बार–बार जूते खड़काते वर्दीधारी आवैं जाँय
>
> घर के भीतर बैठे गृहमंत्री जी दूध मिठाई खाँय
>
> बाहर बैठे हुए सवेरे से मिलने वाले, जमुहाँय
>
> मुंशी आया आगे–आगे पीछे दर्शन दीन्ह
>
> किया किसी को अनदेखा तो लिया किसी को तुरतै चीन्ह।

डॉ. व्यास मणि त्रिपाठी का कथन है कि रघुवीर सहाय की कविता मानवता के हित में एक सार्थक संवाद बनने में विश्वास करती है। इसकी सिद्धि के लिए वह समाज में व्याप्त विसंगतियों तथा विडम्बनाओं को उभारती है। वह आदर्श का ढिंढोरा नहीं पीटती, बल्कि जीवन – जगत के यथार्थ का साक्षात्कार कराते हुए आदर्श स्थिति के निर्माण का प्रयत्न करती है। वह समाज के उन्नयन की चिन्ता के साथ–साथ यह अपेक्षा रखती है कि समाज में भी कविता की चिन्ता बनी रहे।

रघुवीर सहाय एक जाने–माने पत्रकार तथा उच्चकोटि के कवि थे। अतः उन्होंने अपनी पत्रकार की आदत अनुसार कविता की पृष्ठभूमि की भी खूब जाँच –पड़ताल की। काव्य–संसार का पर्यवेक्षण करते हुए उन्होंने उसकी

विसंगतियों, दुष्प्रवृतियों एवं विद्रूपताओं को डटकर उजागर किया। उन्होंने कविता के मर्म को समझते हुए उसे नए आयाम दिए।

सर्वसमावेशी दृष्टिकोण

रघुवीर सहाय स्वातंत्र्योत्तर युग के ऐसे रचनाकारों में से हैं जो अपनी सृजनशीलता के कारण अपनी प्रासंगिकता समय बीतने के साथ–साथ बढ़ाते गए और यह क्रम आज भी जारी है।

साठोत्तरी हिन्दी कविता के दौर में रघुवीर सहाय की कविताओं में राजनीतिक, सामाजिक स्थितियों, कार्यों, परिणतियों, दृष्टिकोणों, विचारों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आधार बनाकर उनके भीतर से व्यक्ति, समुदाय और देश की संभवतः पूरे युग की आत्मा को पहचानने का काव्य–प्रयास है। उनकी कविता अपने परिवेश की ही उपज है। उन्होंने जीवन, समाज और राजनीति आदि सभी को अपनी खुली आँखों से देखा, कठोर यथार्थ को अनुभव किया और वही कुछ अपनी कविताओं में व्यक्त किया। यह कविता वस्तु और शिल्प के स्तर पर नवीनता का दावा प्रस्तुत करती है जिससे उनकी पहचान साठोत्तरी हिन्दी कविता के दौर में सशक्त एवं सार्थक कवि बनाती है।

नई कविता की वैचारिक पृष्ठभूमि वर्तमान जीवन के हर पहलू को मुक्त दृष्टि से देखने का प्रयास है, किन्तु वह कोई ऐसी नई प्रवृत्ति नहीं है जो एकाएक प्रस्तुत हो गई हो, वह परम्परा की ही उपज है। चाहे उसने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय परिवेशों से प्रेरणा क्यों न प्राप्त की हो। अगर परम्परागत दृष्टि से देख जाए तो प्रयोगवाद और प्रगतिवाद दोनों से ही यह प्रभावित है। इन दोनों परम्पराओं के कवि अपने – अपने मूल संस्कारों और विकसित रूपों के साथ नई कविता में दिखाई पड़ते हैं। नई कविता की वैचारिक दृष्टि जीवन के प्रति भावात्मक की अपेक्षा बौद्धिक अधिक है। वह रस–दान की अपेक्षा आधुनिक भाव–बोध की मूल्य – चेतना को जागृत करने के प्रति अधिक सतर्क है।

समाज की चिन्ता

रघुवीर सहाय कविता की चिन्ता लेकर समाज के निकट जाते हैं और समाज की चिन्ता के साथ कविता के निकट आते हैं। इस सन्दर्भ में डॉ. परमानन्द श्री वास्तव का कथन है कि रघुवीर सहाय के यहां कविता की चिन्ता तथा समाज की चिन्ता परस्पर पर्याय हैं। कविता की चिन्ता तथा समाज की चिन्ता वहां इस हद तक एक – दूसरे के लिए पर्याय हो चली हैं कि उन्हें रूपवादी या कलावादी कहकर अलग करना मुश्किल है। यह जरूर है कि रघुवीर सहाय की समाज–चिन्ता के अपने रूप हैं, उसे अनुभव करने या जाँचने की अपनी कसौटी है, उसे व्यक्त करने के अपने ढंग हैं, कभी बहुत सीधे और कभी बेहद जटिल। समाज से संपृक्ति और स्थूल सामाजिकता से अलगाव दोनों रघुवीर सहाय को एक साथ कवि–कर्म के हित में जरूरी लगते हैं।

समाज का अपना आत्म–बल और अपनी स्वतः स्फूर्त पहल का सभी क्षेत्रों में लगातार छीजना रघुवीर सहाय की चिन्ता का कारण है। इससे भी चिन्तनीय यह है कि सर्जनात्मक शब्द की जगह विज्ञापन देने की प्रवृति ही नहीं, आग्रह भी जोर पकड़ रहा है –

> हम लिखते हैं कि
>
> उसकी स्मृत्तियों में फिलहाल
>
> एक चीख और गिड़गिड़ाहट की हिंसा है
>
> उसकी आँखों में कल की छीना–झपटी
>
> और भागमभाग का पैबन्द इतिहास

उसके भीतर शब्द रहित भय और
जख्मी आग है
या तो हम लिखते हैं पर उस व्यक्ति में
हैं जो शब्द वे हम जानते नहीं
जो शब्द हम जानते हैं उसकी
अभिव्यक्ति नहीं, विज्ञापन हमारा है।

साम्यवादी चेतना :

रघुवीर सहाय समाजवादी विचारधारा से प्रभावित तो थे, परन्तु वे मार्क्सवाद से अभिभूत नहीं हुए। इस सम्बन्ध में उनका कहना है कि मार्क्सकवाद को कविता पर गिलाफ की तरह चढ़ाया नहीं जा सकता। उसके लिए मध्यवर्गीय, धोखा खाते रहने वाले ढुलमुल यकीन को अपनी बौद्धिक चेतना को जागरूक रखना पड़ेगा और बराबर जागरूक रहकर एक दृष्टिकोण बनाना होगा। यह दृष्टिकोण सामाजिक, वास्तविक साम्यवादी होगा और इसलिए सही तथा स्वस्थ होगा।

रघुवीर सहाय की दृष्टि में कहीं कोई धुंधलका नहीं था उनका दृष्टिकोण बिल्कुल स्पष्ट था। उनमें सच कहने की ताकत थी। न्याय, स्वतंत्रता और मानवीय गरिमा से संपृक व्यक्तियों और संबन्धों की सामाजिक दुनिया बनाने की उनकी आकांक्षा थी। उन्होंने कभी कल्पना – लोक में उड़ान नहीं भरी। उन्होंने अपनी अनुभूति की कठोर भाव–भूमि पर खड़े होकर वही लिखा, जो उन्होंने देखा और सुना।

उन्होंने भारतीय लोकतंत्र के ढांचे को चरमराते देखा और देखा विसंगतियों का उभार तो मरता हुआ समाज और सिकुड़ता हुआ देश उनकी चिंता के विषय बन गए–

यह समाज मर रहा है, इसका मरना पहचानो मंत्री
देश ही सब कुछ है धरती का क्षेत्रफल सब कुछ है
सिकुड़ कर सिंहासन, भर रह जाए तो
भी वह सब कुछ है
राजा ने अपने मन में कहा जो राजा
प्रजा की दुर्बलता नहीं पहचानता
वह अपने देश को नहीं बचा सकता
प्रजा के हाथों से।

वितंडावाद का भांडाफोड़:–

रघुवीर सहाय ने पोंगापंथी व्यवस्था की बखियां उधेड़ने का सार्थक प्रयास किया है। उनके काव्य में शासन की निरंकुशता और दीन–हीन शोषित समाज की दारूण दशा का हृदयविदारक चित्रण हुआ है। पैदल ही सड़क पार करने का जोखिम उठाता काला नंग – धड़क बच्चा, सहमी – सहमी सी डरी हुई लड़की, रिक्शा खींचता मजदूर, अपने – अपने सलीबों पर टंगी हुई औरतें, खांसता हुआ छोटा दुकानदार, दुबले – पतले रेंगते से आदमी जो अपने हक के लिए आवाज निकालने की भी जुरअत नहीं कर सकते, लंगड़ा – बूढ़ा आदि का चित्रण इनके काव्य में आद्योपान्त विद्यमान है।

इनकी बहुचर्चित 'रामदास' नामक कविता भारत के आम नागरिक के जीवन का लगभ अन्तिम दस्तावेज़ है। यह एक बार लिखी जाकर बार – बार घटित होते रहने वाली कविता है। लिखी जाने के बाद यह अनगिन बार घटित हुई होगी और अनगिन बार फिर घटित होगी। लगता है यह सिललिा बन्द होने वाला नहीं है। इसे इस कविता की सफलता मान लीजिए या तथाकथित भारतीय सभ्य समाज की विफलता। कभी कविता की सफलता इतनी विध्वंसक होती है कि उस से भय लगने लगता है। रामदास हमें बार – बार भयभीत करता है। एक तय कर दी गई हत्या के आगे बेबस नागरिक का समर्पण भारतीय समाज और राजनीति का बहुत संगीन चेहरा बन जाता है। यह हत्या देह में जिस तरह घटित होती है, उससे कहीं बड़े और व्यापक स्तर पर मानस – पटल पर पहले ही घट चुकी होती है। कविता की 'उसे बता दिया गया था' पंक्ति चेतावनियों के निष्फल होते जाने का स्थाई रूप बन जाती है। इस हत्या की कवरेज भी कम भयावह नहीं है–

मरा पड़ा है रामदास यह

देखो देखो बार बार कह

लोग निडर उस जगह खड़े रहे

लगे बुलाने उन्हें जिन्हें संशय था हत्या होगी।

मूल्यांकन :

रघुवीर सहाय ने 'जन' शब्द का अर्थ–विस्तार कर दिया। उनसे पहले प्रगतिशील कविता का जन किसान–मजदूर भर था। उन्होंने निम्नमध्यवर्गीय संताप से भरे लोग जन कविता में उपस्थित किए तो उन्हें अपना न मानने की कोई तर्कसंगत युक्ति ही नज़र नहीं आई। छोटी–छोटी नौकरियों पर जाते या कोई छोटा–मोटा अपना काम–धंधा करते लोग, रोटी–रोजी की तलाश में अपने गाँवों को छोड़कर शहरों की खाक छानते मजलूम इन्सान, स्त्रियों की अज़ीबो गरीब दुनिया, रामदास, रमेश, रमन्ना, हरचरना आदि सभी शोषित–पीड़ित लोग जन की परिधि में आ गए और जनतंत्र की रीढ़ कहलाए। इस विशाल जनसमूह के आधार पर लोकतंत्र की स्थापना हुई, जिसके क्रूर पंजों की मार से उनके सलोने स्वप्न तार–तार हो गए।

सामाजिक संभवानाओं का कारवां लूटने वाले यही संवैधानिक दस्यु हैं, जिनके जुल्मों के सामने सर्वहारा वर्ग असफल, असहाय एवं आतंकित – सा रह जाता है। इस वर्ग की न तो स्मृतियां एक हैं, न स्वप्न – बस यथार्थ एक है। उसकी सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि वह संघर्ष की भाषा नहीं जानता और न ही जानना चाहता है। इस वर्ग की दारूण दशा और अस्फुट असंतोष को किस प्रकार समझा जाए और उसे किस प्रकार व्यक्त किया जाए, यह किसी भी समर्पित कवि के लिए चुनौतीपूर्ण काम है। रघुवीर सहाय ने इस चुनौती को सहर्ष स्वीकारा भी है और निभाया भी है।

4.7 रघुवीर सहाय का काव्य–वैशिष्ट्य

रघुवीर सहाय स्वतांत्र्योत्तर हिंदी साहित्य के एक जाने–माने कवि, लेखक, समीक्षक, विचारक एवं अनुवादक हैं। उनके काव्य में समाज और शासन के आधारभूत क्रिया–कलापों का सांगोपांग चित्रण हुआ है। कविता को कला का नहीं, जीवन का पर्याय मानने वाले रघुवीर सहाय की काव्य चिंता, सहज सजीव और ठेठ निम्नमध्यवर्गीय लोगों के जीवन से जुड़ी हुई है। उनकी कविता देश, समाज, राजनीति और अन्य संस्थाओं की मूल चेतना और भारतीय परिवेश में उनकी वर्तमान चेतना के विरोधामास को उजागर करती है। वे व्यंग्य और विसंगति की भाषा को सहजता प्रदान करते हैं तथा उससे जो विविधायामी अर्थछटा उद्‌भासित होती है, वह उन्हें उस युग के कवियों में अलग पहचान दिलवाती है। जटिल यथार्थ को पकड़कर उसे मूर्तिमन्त करने की क्षमता उनकी अपनी विशेषता है। उनके

बहुआयामी काव्य का आद्योपान्त अनुशीलन करके ही उनके काव्य – वैशिष्ट्य की सम्यक् जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

रचना–प्रक्रिया

वे कविता को सिर्फ शब्दों का आडम्बर बना देने के पक्षधर बिल्कुल नहीं थे। उनकी मान्यता थी कि कविता को जीवंतता से परिपूर्ण होना चाहिए। उसमें रवानी और गतिशीलता का होना अनिवार्य है। नैसर्गिकता में कविता के प्राण बसते हैं, सरलता उसे हरदिल अज़ीज बनाती है। अपनी कविता 'आज फिर शुरू हुआ' में उन्होंने कहा है–

> आज फिर शुरु हुआ जीवन
>
> आज मैंने छोटी–सी सरल–सी कविता पढ़ी
>
> आज मैंने सूरज को डूबते हुए देर तक देखा।

यह जो सूरज को देर तक डूबते हुए देखते रहना, यही वह प्रक्रिया है, जिसमें कविता अनुभव की आँच में धीरे–धीरे पकती है। घट रही घटनाओं का सूक्ष्म – दर्शन एवं दीर्घावलोकन ही किसी कविता को जन्म दे सकता है।

जन–सामान्य के लिए प्रतिदिन घटने वाली घटनाओं का कोई विशेष महत्त्व नहीं होता, पर संवेदनशील सूक्ष्म– दर्शी कवि वृक्ष से गिरते पत्ते की आवाज को भी अनदेखी नहीं करता, उसे तो कबीर की तरह (पात झरता यों कहे, सुन तरूवर बन राय) पत्ते और वृक्ष के बीच का संवाद भी सुनाई पड़ता है। रघुवीर सहाय ने अपनी कविता 'रचता वृक्ष' में यही तो कहा है–

> देखो वृक्ष को देखो वह कुछ कह रहा है
>
> किताबी होगा कवि जो कहेगा कि हाय पत्ता झर रहा है।

यहां कवि की भावप्रवणता स्पष्ट परिलक्षित होती है। कविता में वह जिजीविषा होनी चाहिए जैसी पत्ते झड़ते रहने के बावजूद उस बोलते हुए वृक्ष में होती है। कविता को आशा से परिपूर्ण एवं जीवन्त होना चाहिए।

रघुबीर सहाय का काव्य – संसार उनके काव्य – संग्रहों में बसा हुआ है। उनकी कविताएँ समसामयिक सामाजिक – राजनीतिक स्थितियों का दर्पण ही है, जिसमें देश का प्रतिबिम्ब अपनी सभी सुघड़ताओं एवं कुघड़ताओं के साथ उभर आया है। स्वतंत्रता – प्राप्ति के पश्चात् देश की जो दयनीय दशा हो गई है, आम आदमी के हालात दिनों दिन बिगड़ते जा रहे हैं। कुर्सी–लिपटु और कुर्सी–झपटु सत्ता–लोलुप नेता अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए लोगों के हितों से खिलवाड़ कर रहे हैं। इन सभी घटनाओं, समस्याओं का सटीक चित्रण इनकी कविताओं में अंकित है। इन चित्रणों में सर्वहारा शोषित वर्ग से लेकर शासन–व्यवस्था, नेता, पूंजीपति, मिलमालिक, गुण्डाराज, राजनीतिक दल, नारी–उत्पीड़न आदि राष्ट्रीय समस्याओं का पूरा विवरण एवं वर्णन समाहित है।

हत्या की संस्कृति

यहां उनके काव्य में चित्रित भारतीय संस्कृति का वीभत्स रूप प्रस्तुत है :

> देश में बर्बरता
>
> हत्याएं चीथड़े खून और मैल
>
> आज भारतीय संस्कृति के मूल्य हैं
>
> यह संस्कृति उसको पोसती है जो सत्य से विरूद्ध है

देश से सशक्त और दानशील धीर है
भड़क कर एक बार जो उग्र हो उसे तुरंत मार देती है।
हत्या की संस्कृति में प्रेम नहीं होता है
नैतिक आग्रह नहीं
प्रश्न नहीं पूछती है रखैल
सब कुछ दे देती है बिना कुछ लिए हुए
पतिव्रता की तरह।

अधिकारों के प्रति जागरूकता

रघुवीर सहाय की प्रारम्भिक रचनाओं में आम आदमी अपने अधिकारों के प्रति सजग दिखाई पड़ता है। कवि की मान्यता है कि दुख तो अपना साथी है, उससे घबराना नहीं चाहिए। दुख तो जीवन को मांजते हैं। अतः विपरीत स्थितियों का डटकर मुकाबला करना चाहिए। यदि कोई हमारे अधिकारों का अतिक्रमण करके उन्हें हम से छीन लेने का दुस्साहस करे तो हमें ऐसे अत्याचारी से कोई समझोता नहीं करना चाहिए :

हम ठौर नहीं मिलता है कोई दिल को
हम जो पाते हैं उस पर लुट जाते हैं।
क्या यहीं पहुँचना होता है मंजिल को?
हमको तो अपने हक सब मिलने चाहिए
हम तो सारा का सारा लेंगे जीवन
'कम से कम' वाली बात न हम से कहिए।

रूढ़ियों का विरोध

किसी भी प्रगतिशील स्वतंत्रचेता कवि का यह दायित्व है कि वह रूढ़ियों के कुहासे में फंसे अपने समाज का मार्ग प्रशस्त करे, उसे जीने की राह दिखाए। रूढ़ियाँ अंधविश्वास एवं कुप्रथाएँ समाज के अंजर–पंजर को जर्जर कर देती हैं। रघुवीर सहाय ने नई कविता की प्रवृतियों के अनुकूल भारतीय समाज को पंगु बना रही रूढ़ियों का डटकर विरोध किया। उनका ओजस्वी स्वर फूट पड़ा–

"तोड़ो तोड़ो तोड़ो
ये पत्थर ये चट्टानें
ये झूठे बंधन टूटें
तो धरती को हम जानें
सुनते हैं मिट्टी में रस है जिससे उगती दूब है
अपने मन के मैदानों पर व्यापी कैसी ऊब है
आधे–आधे गानें।"

साम्प्रदायिक सौहार्द

भारत में हिन्दू और मुसलमान सदियों से इकट्ठे रहते आए हैं। धार्मिक आधार पर भारत का विभाजन हो जाने के बाद भी हिन्दू – मुस्लिम समाज में पारस्परिक सद्भाव बना रहा, किन्तु कुछ स्वार्थपरत राजनेता वोट बटोरने के लिए हिन्दू – मुस्लिम का पाशा समाज में फेंकते रहे, आज भी फेंक रहे हैं। रघुवीर सहाय ने इस हैरत अंगेज राजनीतिक हकीकत को अपनी खुली आँखों से देखा और इस प्रकार बयान किया–

> मैं जहां रहता हूँ, हिन्दू और मुसलमान
> दोनों बेसुरे हैं, भजन और कीर्तन
> करते हैं, ढोल और चिमटे की
> ढक–ढक सुनाई पड़ती है,
> भजन के शब्द नहीं, अजान दी जाती है
> हरयाणवी लोकगीत सुनाई पड़ता है।

रघुवीर सहाय ने युगीन परिवेश का सूक्ष्म निरीक्षण किया और विघटित मानव – मूल्यों को बड़ी अन्तर – भेदी दृष्टि से देखा। मानवीय मूल्यों के ह्रास एवं राजनेताओं के कुचक्र के कारण साम्प्रदायिक वैमनस्य बढ़ने लगा तो उन्होंने घायल मानवता के तन पर चन्दन का अनुलेप लगाने का प्रयास किया –

> मधुर है किन्तु मानव से सदा व्यवहार मानव का
> मधुर है किन्तु करूणा से भरा संसार मानव का
> तुम्हारे भी कभी कुछ क्षण रूदन में बीतते होंगे,
> सुनाता हूँ इसी से तो तुम्हें वह वेदना मन की।

नारी – प्रेम

रघुवीर सहाय ने अपनी कविता में नारी को पर्याप्त स्थान दिया है। नारी – जीवन का पूरा 'एलबम' उनके काव्य में समाहित है। उसके जीवन के विविध रूप उनके काव्य में सर्वत्र बिखरे पड़े हैं। यहां उनके काव्य संग्रह 'आत्महत्या के विरूद्ध' से नारी–प्रेम की एक बानगी प्रस्तुत की जा रही है–

> ओठों पर ओठ दहकते हों/आँखों पर आँखें मुद जाएं,
> भुजबंधन कसता जाए/यह आतुर तन उस तन में धंसता जाए
> थक जाएं, थक जाएं तेरे कुच/मेरे सीने पर धक–धक करके
> फड़कें फिर रह जाएं गुंफित जंघाएं
> हो जाए वह क्षण जीवन–मरण विशाल सखी।

कवि संभवतः आनन्द के इन क्षणों को भूलन नहीं चाहता। उसे भविष्य की चिन्ता सता रही है, क्योंकि आने वाले कल के मिजाज़ का किसी को कोई इलम नहीं होता। रघुवीर सहाय को भी इसकी जानकारी नहीं है। अतः वह अपने मधुर मिलन की यादों को सहेज कर रखना चाहता है–

> क्या होगा इस कभी–कभी के मधुर मिलन की घड़ियों का
> जीवन की टूटी–टूटी इन छोटी–छोटी कड़ियों का

कैसे इनकी विशृंखलता मुझको–तुझको जोड़ेगी

क्या कल नाता वही जुड़ेगा आज जहां यह तोड़ेगी?

प्रेम पर तुष्टिगुण का सिद्धान्त लागू नहीं होता। इसमें दिनोंदिन जितनी गहराई में डूबा जाए, यह उतना ही और अभिप्सु होता जाता है। विछोह में तड़प और बढ़ जाती है। 'अपने हिय से जानिए मोरे हिय की बात' की सच्चाई दोनों ओर लागू होती है, क्योंकि दोनों ओर प्रेम पलता है। तभी तो उन्होंने कहा है–

मत पूछना हर बार मिलने पर कि "कैसे हैं"

सुनो क्या सुन नहीं पड़ता, तुम्हें संवाद मेरे क्षेम का,

लो, मैं समझता था कि तुम भी कष्ट में होगी

तुम्हें भी ज्ञात होगा दर्द अपने इस अधूरे प्रेम का।

अकेलेपन की अनुभूति

रघुवीर सहाय के काव्य में सर्वत्र सामाजिक यथार्थ का चित्रण ठाठें मार रहा है। उनकी काव्य कृति 'आत्महत्या के विरूद्ध' में यह विशेष रूप से द्रष्टव्य है। समाज के शोषित, दलित, पीड़ित, उपेक्षित एवं वंचित वर्ग के प्रति सहानुभूति और उनके उन्नयन के लिए चिन्ता, व्याकुलता एवं आक्रोश उनके काव्य का मेरूदण्ड है। सामाजिक प्रश्नाकुलताओं, विसंगतियों, विद्रूपताओं एवं पीड़ाओं का चित्रण करने का बीड़ा तो मानो उन्होंने सहित्य – जगत् में पदार्पण करते ही उठा लिया था।

उनमें अपने युग के कवियों से कुछ अलग ही दिखाई पड़ता है। यह है उनकी गैर रोमांटिक भाव–बोध से भरी रचनाओं के प्रति प्रतिबद्धता। इस क्षेत्र में वे अकेले ही खड़े हैं। इसमें कोई आश्चर्य भी नहीं है। उन्होंने इसे स्वयं स्वीकारते हुए लिखा है–

कितना अच्छा था छायावादी

एक दुख लेकर एक गान देता था

कितना कुशल था प्रगतिवादी

हर दुख का कारण वह पहचान लेता था

कितना महान था गीतकार

जो दुख के मारे अपनी जान देता था

कितना अकेला हूँ इस समाज में

जहाँ सदा मरता है एक और मतदाता।

मोह–भंग की स्थिति

आजादी के बाद भारतवासियों ने स्वतंत्रता के सुनहले सपने संजोए थे। उन्होंने सोचा था कि देश में एक आदर्श समाज विकसित होगा, लोककल्याणकारी शासन – व्यवस्था स्थापित होगी, परन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ। लोगों के सपने चूरचूर हो गए, उनका मोहभंग हुआ। लोगों के मन में कुंठा और निराशा के भावों ने डेरा डाल लिया। रघुवीर सहाय ने इस मोहभंग की स्थिति को देखा, भोगा और महसूस किया। अपनी 'समझौता' नामक कविता में उन्होंने लिखा है–

एक भयानक चुप्पी छाई है समाज पर
शोर बहुत है पर सचाई से कतरा कर गुजर रहा है
एक भयानक एका बांधे है समाज को
कुछ न बदलने के समझौते का है एका
एक भयानक बेफिक्री है
पाठक अत्याचारों के किस्से पढ़ते हैं अखबारों में
मगर आक्रमण के विचार को पत्र नहीं लिखते हैं।

मानवतावादी दृष्टिकोण

मानव जीवन की सुखद एवं दुःखद अनुभूतियों को अभिव्यक्ति देना ही कवि का मूल कर्म होता है। रघुवीर सहाय ने इस कर्म को अपना धर्म समझ कर अपनाया है। उनके समस्त काव्य में मानवतावादी दृष्टिकोण को सहज ही देखा जा सकता है। मानवता के मग में शूल बिछाने वाले एक प्रसंग को इन्होंने इस प्रकार उद्‌घाटित किया है–

क्योंकि आज ताकतवर
धरती निचोड़कर दौलत बढाएंगे
और उसे इस तरह बांटेंगे कि हर समय
उनको गरीबी की जगह मिलती रहे
ऐसे मानवीयता बची रहे पृथ्वी पर
हर समय एक नयी क्रूरता पैदा होती रहे।

अभिव्यंजनागत वैशिष्ट्य

काव्य में अनुभूति और अभिव्यक्ति की स्थिति आत्मा और देह की – सी होती है। अनुभूति के गहन होने पर अभिव्यक्ति का सशक्त होना स्वाभाविक है। रघुवीर सहाय का काव्य भी इसका अपवाद नहीं है। अभिव्यक्ति में भाषा का शीर्षस्थ स्थान है। रघुवीर सहाय एक कवि होने के साथ – साथ एक पत्रकार भी थे। अतः उनके काव्य में एक कवि और पत्रकार की मिली–जुली भाषा का मिश्रण दिखाई पड़ता है, जिसका रहस्योद्‌घाटन करते हुए सुरेश शर्मा ने कहा है कि उनका काव्य उनके पत्रकार व्यक्तित्व से पैदा होता है। सहाय जी का सौंदर्यशास्त्र खबर का सौंदर्यशास्त्र है। इसलिए उनकी भाषा खबर की भाषा है और ज्यादातर कविताओं की विषयवस्तु स्वरधर्मी है। वे अपनी कविताओं के विषय समाज में मनुष्य की बदलती जीवन– स्थितियों में तलाशते हैं। भारतीय लोकतंत्र पद्धति में मतदाताओं की अरक्षित – असहाय जिदंगी की खबरें उन्होंने अपनी कविताओं में लिखी हैं–

फिर जाड़ा आया फिर गर्मी आई
फिर आदमियों के पाले से मरने की खबर आई
न जाड़ा ज्यादा था न लू ज्यादा
तब कैसे मरे आदमी
वे खड़े रहते हैं तब नहीं दिखते
मर जाते हैं तब लोग जाड़े और लू की मौत बताते हैं।

शब्द–चयन

काव्य में शब्द–चयन का विशेष महत्त्व होता है, क्योंकि शब्द ही काव्य की अर्थवत्ता को उजागर करते हैं। किसी अंग्रेजी विद्वान ने काव्य में शब्द–चयन की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा है 'दा चोयसस्ट वर्डस् पलेस्ड' इन दा बेस्ट मैनर इज पोयट्री।' अर्थात् चुने हुए शब्दों को संजीदा सलीके से सजा देना ही कविता है। रघुवीर सहाय का काव्य इस दृष्टि से पूर्णतः सफल है। उनका शब्द–चयन लासानी है, जिसका एक उदाहरण यहां प्रस्तुत किया जा रहा है–

पूरब–पच्छिम से आते हैं
नंगे–बूचे नरकंकाल
सिंहासन पर बैठा, उनके
तमग़े कौन लगाता है
कौन–कौन वह जन–गण–मन
अधिनायक वह महाबली
डर हुआ मन बेचैन
जिसका बाजा रोज बजाता है

ग्रामीण परिवेश को उजागर करने के लिए उन्होंने आम आदमी के बोलचाल की भाषा को अपनाया। उसमें ठेठ आंचलिक बोली के शब्द संजोए। उनके काव्य का कोई भी अंश ऐसा नहीं है, जिसे समझने के लिए द्रविड़ायाम लगाना पड़े। बानगी के रूप में लोक भाषा में नियोजित उनके काव्य का एक अंश देखिए –

"देखो सड़क पार करता है पतला दुबला बूढ़ा आदमी
आती हुई टरक (ट्रक) का इसको डर नहीं
या कि जल्दी चलने का इसमें दम नहीं रहा
आँख उठा वह देखता है डरेवर (ड्राइवर) को
देखो मैं ऐसे ही चल पाता हूँ।"

उनकी भाषिक क्षमता एवं शब्द–चयन को रेखांकित करते हुए डॉ. अनन्त कीर्ति तिवारी ने लिखा है कि रघुवीर सहाय स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य के एक महत्त्वपूर्ण कवि, लेखक एवं विचारक हैं। उनके लेखन में साहित्य और समाज से बुनियादी सरोकारों पर खास बल दिखाई देता है। कविता को कला का नहीं, जीवन का पर्याय मानने वाले रघुवीर सहाय की काव्य–भाषा और काव्य–विवेक दोनों सहज, सजीव और ठेठ मध्यवर्गीय भारतीय जिन्दगी से अनुप्राणित हैं। उनकी कविता देश, समाज, राजनीति, लोकतंत्र का मार्मिक साक्षात्कार कराती है और इन शब्दों, इन संस्थाओं की मूल चेतना विरोधाभास को उजागर करती है।

अलंकार–विधान :

सौन्दर्य–चेतना की दृष्टि से रघुवीर सहाय ने अपने अनुभवों को कलाहीन सर्जनमात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है। उनका काव्य वैशिष्ट्य उनका अपना काव्य– मुहावरा है जो सबसे अलग दिखता है। बिना किसी अलंकरण के सरल सीधी बोलचाल की भाषा में पूरे परिवेश को भयावहता, आतंक तथा क्रूरता को पूरी शक्ति के साथ अभिव्यक्त करना ही उनके काव्य में मूल्य – चेतना की सौंदर्यात्मक विशेषता है। वर्तमान की सही पहचान, सूक्ष्म पर्यवेक्षिणी दृष्टि,

संवेदनशीलता तथा अनलंकृत अभिव्यक्ति की मूल्य–चेतना ने ही उन्हें एक 'तिक्त सत्य' या कडुवा सत्य' कहने वाला कवि बनाया है।

यद्यपि उन्होंने अपने काव्य में प्रयत्नपूर्वक अलंकारों को नहीं ठूंसा फिर भी अनायास ही उनके काव्य में कुछ अलंकार सहज ही अनुस्यूत हो गए। इन अलंकारों को इस प्रकार दर्शाया जा सकता है–

अनुप्रास : कि किसी की कोई राय न रह जाएगी।

मरते मनुष्यों के मध्य खड़ा मक्कार मंत्री।

बीस बरस बीत गए।

उपमा : पकी फसल–सा गेरूआ गहराया जिसका तन

और कभी जब गौरैया–सा मन

सरसों के फूलों–सी जिसकी खिली जवानी

उदाहरण : जैसे पशु पर गर्म लोहे की मुहर लगा दी जाती है

उस कमसिन लड़की की गोद में एक बच्चा आ गया।

यह रिक्त अर्थ,उन्मुक्त छन्द संस्मरण हीन जैसे सुगंध।

रूपकः यह भारत एक गद्दा है प्रेम का

ओढ़ने–बिछाने को धारण कर।

विभावना : सब कुछ देती है बिना कुछ लिए हुए।

अपह्नुति : भजन के शब्द नहीं अजान दी जाती है।

वीप्सा : पानी पानी बच्चा बच्चा

हिन्दुस्तानी मांग रहा है पानी पानी

उल्लेख :

उन बीस जनों के औरतपन–की गठरी बन
कोने में खटिया पर जा करके पहुड़ रही
वह पहुड़ी रही साल भर तक फिर गुजर गई
औरतें उठीं घर धोया मर्द गए बाहर अरथी लेकर

प्रश्न अलंकारः

आतंक कहां जा छिपा भागकर जीवन से
जो कविता की पीड़ा में अब दिख नहीं रहा?
हत्यारों के क्या लेखक साझीदार हुए

जो कविता हम सबको लाचार बनाती है?

श्लेष : सेना का नाम सुना देशप्रेम के मारे

बिम्बात्मकता :

अपने सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों को भी शब्द–रचित बिम्बों के रूप में प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति प्रयोगवादी कविता में भी थी जो नई कविता में आकर और भी प्रशस्त हो गई। अपने युग की चाल के अनुसार रघुवीर सहाय ने भी बिम्बात्मक शैली में काव्य–रचना की। उनके काव्य में विविध प्रकार के बिम्बों की छटा सहज ही देखी जा सकती है।

दृश्य बिम्ब :

"चौड़ी सड़क गली पतली थी
दिन का समय घनी बदली थी
रामदास उस दिन उदास था
अंत समय आ गया पास था
उसे बता यह दिया गया था–
उसकी हत्या होगी।"

अमूर्त बिम्ब :

स्वीकार कर रही नव जल
गुरु आज्ञा–सा
गरम गुलाबी शरमाहट–सा हल्का जाड़ा

श्रव्य बिम्ब :

"छापेखानों से चल दिया अखबार
ठेलों की लड़खड़ाहट, दूधवालों के खनकते बरतन
जल्दी चलते हुए, चप्पल के हकलाने के से
शब्द पास आते हैं और दूर चले जाते हैं।"

नाद बिम्ब : तोड़ो तोड़ो तोड़ो।

छन्द :

छन्द कविता के प्राणों का स्पन्दन होंते हैं। रघुवीर सहाय के समय छन्दयुक्त और छन्दमुक्त दोनों ही प्रकार की कविता लिखी जा रही थी। उन्होंने इस तथ्य को स्वीकारते हुए कहा है कि कुछ कविताओं के साथ छन्द आया और अपने साथ कविता का काफी कुछ अंश लिए हुए आया। जब कविता में छंद की जमीन बनने लगी तो मालूम हुआ कि इस में छन्द है ही और रहेगा भी। यद्यपि उन्होंने छंदोबद्ध और छन्द–मुक्त दोनों ही प्रकार की कविताएं रची, फिर भी उनकी रूझान छंदोबद्ध कविता लिखने की ओर ही अधिक रही।

कविता की छन्द–मुक्ति के आन्दोलन के चलते जब कविता मरने लगी तो ऐसे में उन्होंने छंद की खुलकर

पैरवी की। लय को वापस लाने का आग्रह किया। अपनी 'अरे अब ऐसी कविता लिखो' नामक कविता में उन्होंने बड़ी मार्मिकता के साथ कहा–

अरे अब ऐसी कविता लिखो

कि जिसमें छन्द घूमकर आय

घुमड़ता जाय देह में दर्द

कहीं पर एक बार ठहराय।

यह जो घुमड़ता हुआ दर्द है, भाव–बोध है, उसका टिकाऊ होना बहुत जरूरी है। यह जो कविता का ठहराव है, वह लय के माध्यम से ही होता है। यह लय ही है जो स्मृति में टिकती है। इसके सहारे ही कविता के शब्द स्मृति में टिकते हैं। और ऐसा होने पर उन शब्दों में निहित भाव तथा विचार हमारे मन में टिकते हैं तथा समाज में एक स्थाई वैचारिक परिवर्तन आने के कारक बनते हैं।

साहित्य में प्रचलित छन्दों के अतिरिक्त उन्होंने लोक–प्रचलित छन्दों को भी अपनी रचनाओं में प्रयुक्त किया। आल्हा छन्द में रचित उनकी कविता का एक उदाहरण देखिए –

इतने बड़े–बड़े कमरे थे, जिनमें सौ–सौ लोग समाँय

बार–बार जूते खड़काते वर्दीधारी आवैं जाँय

घर के भीतर बैठे गृहमंत्री जी दूध मिठाई खाँय

बाहर बैठे हुए सवेरे से मिलने वाले, जमुहाँय।

इस प्रकार हम देखते हैं कि रघुवीर सहाय का समस्त काव्य भाव – वैविध्य के साथ – साथ अभिव्यंजना की दृष्टि से भी बड़ा प्रभावात्मक बन पड़ा है।

अपनी प्रगति जांचिए

13. निम्नलिखित में से 'नई कविता' को कौनसा नाम नहीं दिया गया?

(क) प्रयोगवादी (ख) रहस्यवादी

(ग) प्रतीकवादी (घ) प्रपद्यवादी

14. रघुवीर सहाय के काव्य में कौन से चित्रण की प्रमुखता है?

(क) युद्ध चित्रण (ख) प्रकृति चित्रण

(ग) नारी चित्रण (घ) यथार्थ चित्रण

15. 'टरक' और 'डरेवर' कौनसी भाषा के शब्द हैं?

(क) उर्दू के (ख) हिन्दी के

(ग) लोक भाषा के (घ) संस्कृत के

16. 'मरते मनुष्यों के मध्य खड़ा मक्कार मंत्री' में कौन–सा अलंकार है?

(क) उत्प्रेक्षा (ख) अनुप्रास

(ग) विभावना (घ) श्लेष

17. 'यह भारत एक गद्दा है प्रेम का' में कौन–सा अंलकार है?

(क) रूपक (ख) मानवीकरण

(ग) यमक (घ) उपमा

18. 'गरम गुलाबी शरमाहट – सा हल्का जाड़ा' में कौनसा बिम्ब है?

(क) श्रव्य बिम्ब (ख) दृश्य बिम्ब

(ग) अमूर्त बिम्ब (घ) नाद बिम्ब

4.8. सारांश

काव्यभाषा से स्तर पर भी रघुवीर सहाय अपने समकालीन रचनाकारों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वे अपने शिल्प के प्रति अत्यन्त सजग हैं। बोलचाल की सरलभाषा में सहज करूणा और ज़िंदगी की अनुभूतियों का यथार्थ निरूपण उनकी विशिष्टता है। वे अपनी रचनाओं में सामाजिकता के साथ – साथ भाषा और शिल्प के मोर्चों पर जागरूक प्रहरी बनकर खड़े हैं। उनके लिए अनुभूति की प्रामाणिकता और शिल्प के प्रति सजगता दोनों अनिवार्य हैं। वे सामाजिक यथार्थ को रूपायित करने के लिए अपनी भाषा और मुहावरों को विस्तृत आधार देते हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि रघुवीर सहाय ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा के बल पर आधुनिक हिंदी साहित्य में अपना अप्रतिम स्थान बनाया है। नई कविता के वे एक सशक्त स्तंभ हैं। वे एक कुशल कवि होने के साथ ही सजग पत्रकार, लेखक एवं अनुवादक भी रहे हैं। अपनी कविताओं के माध्यम से उन्होंने जनसाधारण की विविध समस्याओं को संवेदनशील होकर साहित्य के फलक पर अंकित किया है। स्वतंत्रता, समानता, मानवीयता, जनतंत्र, सामाजिक न्याय, हक और अधिकार आदि महत्त्वपूर्ण विषयों को अपने काव्य में उछाला है।

आधुनिक हिंदी साहित्य में रघुवीर सहाय की प्रतिभा अपने आप में वैशिष्ट्य पूर्ण है। इनका विविधापूर्ण काव्य हिन्दी साहित्य में अपना सानी नहीं रखता। इनकी कविताएँ व्यापक, विविधांगी एवं मानवीयता की अनुपम प्रमिमान हैं। उनकी काव्यभाषा कविता के कथ्य को प्रभावात्मक रूप में प्रस्तुत करने में पूर्ण रूपेण सक्षम है, जिसके प्रयोग में नए मुहावरों और लोकाक्तियों के सुन्दर प्रयोग समन्वित हैं। वे सचमुच अद्वितीय रचनाकार थे। उनकी काव्यकिरणों से हिन्दी साहित्य सदैव जगमगाता रहेगा और नई पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत बनकर उसका मार्ग प्रशस्त करेगा।

4.9 मुख्य शब्दावली

स्वातंत्र्योत्तर : आजादी के बाद का

म्रियमाण : जो मरने को है

अनुस्यूत : समाहित, समाविष्ट

देदीप्यमान : चमकते हुए

आमूलचूल : पूरी तरह

अराजकता : कानून हीनता

विद्रूपता : भोंडापन, उपहास

उद्विग्नता : व्याकुलता, बेचैनी

ऊहापोह : तर्क–वितर्क, उतार–चढ़ाव

संत्रास	:	दुःख, यातना
आँचलिक	:	अंचल विशेष का, लोकल
आलंकारिक	:	अलंकारों से युक्त
विवादास्पद	:	विवादों से भरा हुआ
विडम्बना	:	उपहास का विषय
भावानुकूल	:	भावों के अनुसार
छरहरी	:	पतली, फुर्तीली
व्यंग्यात्मक	:	व्यंग्य से भरा हुआ
पहुड़ी रही	:	पड़ी रही
उत्पीड़ित	:	दुःखी, पीड़ा से युक्त
उत्फुल्ल	:	प्रसन्न
चहुंदिश व्याप्त	:	चारों दिशाओं में फैला हुआ
नृशंस	:	बेरहमी से
मेषमाता	:	भेड़, निर्बल
नुमाइश	:	प्रदर्शनी
पर्यवेक्षण	:	पूरी तरह जांचना–परखना

4.10 'अपनी प्रगति जांचिए' के उत्तर

1. (ग) 1929
2. (घ) 1951
3. (क) लखनऊ
4. (ख) लोग भूल गए हैं
5. (ख) मैकबेथ
6. (घ) विमलेश्वरी
7. (ग) किसी मूर्ख की
8. (क) वेश्यावृत्ति के लिए
9. (ख) आम आदमी का
10. (घ) मिट्टी के बराबर
11. (ग) वीप्सा
12. (घ) अपनी इच्छानुसार जीवन नहीं जी सकेगी।

13. (ख) रहस्यवादी

14. (घ) यथार्थ चित्रण

15. (ग) लोकभाषा के

16. (ख) अनुप्रास

17. (क) रूपक

18. (ग) अर्मूत बिम्ब

4.11 अभ्यास हेतु प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रघुवीर सहाय के जीवन का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. रघुवीर सहाय के कर्म–क्षेत्र पर प्रकाश डालिए।
3. 'पढ़िए गीता' कविता में नारी को क्या परामर्श दिया गया है?
4. 'किले में औरत' कविता के प्रतिपाद्य को दर्शाइए।
5. 'बड़ी हो रही है लड़की' कविता की संवेदना को प्रतिपादित कीजिए।
6. 'रामदास' कविता के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।
7. 'पैदल आदमी' कविता का मूल मन्तव्य क्या है?
8. 'पानी पानी बच्चा बच्चा' कविता समाज की किस स्थिति को उजागर करती है?
9. रघुवीर सहाय की काव्य–भाषा पर प्रकाश डालिए
10. रघुवीर सहाय के काव्य में बिम्ब–विधान को रेखांकित कीजिए।
11. रघुवीर सहाय के काव्य में प्रयुक्त अलंकारों का परिचय दीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. रघुवीर सहाय के रचना–संसार का आकलन कीजिए।
2. रघुवीर सहाय के काव्य में चित्रित सामाजिक यथार्थ को दर्शाइए।
3. रघुवीर सहाय के काव्य में वर्णित राजनेताओं का चरित्रनामा प्रस्तुत कीजिए।
4. रघुवीर सहाय द्वारा लोकतंत्र पर कसी गई फब्तियों का विवेचन कीजिए।
5. रघुवीर सहाय की छन्दयुक्त एवं छन्दमुक्त रचनाओं का प्रतिपादन कीजिए।
6. रघुवीर सहाय के काव्य की विशेषताएँ लिखिए।
7. रघुवीर सहाय के काव्य–सौष्ठव को रेखांकित कीजिए।
8. सिद्ध कीजिए कि रघुवीर सहाय 'नई कविता' के सशक्त स्तंभ हैं।
9. रघुवीर सहाय के काव्य में वर्णित विसंगतियों एवं विद्रूपताओं का विवेचन कीजिए।

10. रघुवीर सहाय की काव्योपलब्धियों पर प्रकाश डालिए।

11. रघुवीर सहाय के काव्य का मूल्यांकन कीजिए।

4.12 आप ये भी पढ़ सकते हैं।

1.	डॉ0 अनन्त कीर्ति तिवारी	रघुवीर सहाय की काव्यानुभूति और काव्य भाषा (1996) विवि प्रका0 वाराणसी
2.	ललित गुप्त	साठोत्तरी कविता
3.	नरेन्द्र सिंह	साठोत्तरी हिंदी कविता में जनवादी चेतना (1990) वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
4.	सुरेश शर्मा	रघुबीर सहाय का कवि कर्म (1981) पिपुल्स लिटरेसी, दिल्ली
5.	डॉ0 रामजी तिवारी	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी समीक्षा के काव्य – मूल्य (1980) अतुल प्रकाशन, कानपुर
6.	मंगलेश डबराल	कवि का अकेलापन
7.	विजय कुमार	साठोत्तरी हिन्दी कविता (1986) परिवर्तित दिशाएँ, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली
8.	कृष्ण कुमार	रघुवीर सहाय संचयिता, (2003) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9.	डॉ0 गणपति चन्द्र गुप्त	हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (1994) लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10.	भटनागर महेन्द्र	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य (1969), नव भारती सहकार प्रकाशन, दिल्ली
11.	सुरेश चन्द्र	नई कविता और उसका मूल्यांकन (1963), आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
12.	रघुवीर सहाय	यथार्थ यथास्थिति नहीं (1984) वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
13.	जगदीश गुप्त	नई कविता, स्वरूप एवं समस्याएं (1969) भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी
14.	ललित शुक्ल	नया काव्य नये मूल्य(1975) दि मैकमिलन कम्पनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, दिल्ली
15.	गिरिजाकुमार माथुर	नयी कविता : सीमाएं और संभावनाएँ (1973) नैशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
16.	डॉ0 अजिता तिवारी	नयी कविता और रघुवीर सहाय का काव्य
17.	डॉ0 परमानन्द श्रीवास्तव	शब्द और मनुष्य
18.	नंदकिशोर नवल	समकालीन काव्य–यात्रा
19.	डॉ0 जय शंकर तिवारी	रघुवीर सहाय : जीवन एवं संवेदना